हम यीशु में विश्वास करते हैं

अध्याय 3

भविष्यद्वक्ता

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
पुराने नियम की पृष्ठभूमि 2
योग्यताएँ 2
परमेश्वर द्वारा बुलाया जाना 4
परमेश्वर के वचन का दिया जाना 5
परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना 6
पूर्णता के द्वारा प्रमाणित होना 6
कार्यप्रणाली 8
अधिकार 8
कार्य 9
विधियाँ 10
अपेक्षाएँ 11
ऐतिहासिक विकास 11
विशेष भविष्यद्वाणियाँ 15
यीशु में पूर्णता 16
योग्यताएँ 17
परमेश्वर द्वारा बुलाया गया 17
परमेश्वर के वचन का दिया जाना 18
परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना 19
पूर्णता के द्वारा प्रमाणित होना 20
कार्यप्रणाली 21
अधिकार 22
कार्य 22
विधियाँ 24
अपेक्षाएँ 25
प्रभु का संदेशवाहक 25
मूसा के समान भविष्यद्वक्ता 26
भविष्यद्वाणी की पुनर्स्थापना 28
आधुनिक उपयोग 29
प्रकाशन का विस्तार 30
प्रकाशन की विषय-वस्तु 32

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पवित्रशास्त्र की व्याख्या..... 33
पवित्रशास्त्र के प्रति समर्पित होना..... 34
उपसंहार..... 37

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम यीशु में विश्वास करते हैं

अध्याय तीन

भविष्यद्वक्ता

परिचय

जब लोग समस्याओं का सामना करते हैं, या जब उन्हें महत्वपूर्ण निर्णय लेते लेने होते हैं, तो वे अक्सर सलाह के लिए दूसरों की ओर मुड़ते हैं। यदि विषय छोटा या परिचित होता है, तो वे अपने परिवार या फिर पड़ोसियों से सलाह मांगते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। परंतु जब विषय बड़ा हो और उसके दीर्घकालिक परिणाम हों तो लोग अक्सर किसी विशेषज्ञ की तलाश करते हैं, अर्थात् एक ऐसे व्यक्ति की जिस पर इस बात की आधिकारिक और सच्ची परामर्श देने के लिए भरोसा किया जा सके कि क्या करना सही होगा। पवित्रशास्त्र के संपूर्ण इतिहास में, परमेश्वर ने अक्सर अपने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से इस प्रकार की अगुवाई प्रदान की है जिस पर पूरा भरोसा रखा जा सके। इन स्त्रियों और पुरूषों ने उन परिस्थितियों में आधिकारिक रूप से परमेश्वर की वाचाओं को लागू किया जिनका उसके लोगों ने सामना किया।

हम यीशु में विश्वास करते हैं की हमारी श्रृंखला का यह तीसरा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "भविष्यद्वक्ता" दिया है। इस अध्याय में हम उन तरीकों की खोज करेंगे जिनमें यीशु भविष्यद्वक्ता के कार्य को पूरा करता है और हमारे जीवनों में परमेश्वर की वाचा को आधिकारिक रूप से लागू करता है।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में उल्लेख किया है, पुराने नियम में परमेश्वर ने तीन कार्यभारों की स्थापना की जिनके द्वारा उसने अपने राज्य को संचालित किया : भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के कार्यभार। और परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण में, जिसे हम सामान्यतः नए नियम का युग कहते हैं, ये तीनों कार्यभार मसीह में अपनी परम पूर्णता को पाते हैं। इसी कारण से, संपूर्ण इतिहास में इन कार्यभारों के महत्व और उनकी कार्यप्रणाली का अध्ययन हमें यीशु द्वारा परमेश्वर के वर्तमान संचालन को और इसके साथ-साथ उसके विश्वासयोग्य अनुयायियों की आशीषों और जिम्मेदारियों को समझने में सहायता कर सकता है।

अधिकाँश लोग जब "भविष्यद्वक्ता" शब्द को सुनते हैं तो एक ऐसे व्यक्ति के बारे सोचने लगते हैं जो भविष्य के बारे में भविष्यद्ववाणियाँ करता है। और अधिकाँश मसीही भी ऐसा ही सोचते हैं। परंतु जबकि यह सत्य है कि बाइबल के भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्य के बारे में पहले से बताया था, परंतु यह उनकी सेवकाई का मुख्य केंद्र नहीं था। मूलभूत रूप से, परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता उसके राजदूत थे। उनका कार्य परमेश्वर की वाचा को स्पष्ट करना, और उसके लोगों को उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए प्रोत्साहित करना था। और यीशु की भविष्यद्ववाणीय कार्य का केंद्र भी यही था।

भविष्यद्वक्ताओं के कार्यों की इस समझ के साथ हम एक भविष्यद्वक्ता की परिभाषा इस प्रकार से देंगे :

> **परमेश्वर की वाचा के राजदूत, जो परमेश्वर के वचन की घोषणा करते हैं और उसे लागू करते हैं, विशेषकर पाप के विरूद्ध दंड की चेतावनी देने, और परमेश्वर के प्रति ऐसी विश्वासयोग्य सेवा करने के लिए उत्साहित करते हैं जो उसकी आशीषों की ओर ले चलती है।**

हमारा यह अध्याय यीशु की एक भविष्यद्वक्ता की भूमिका से संबंधित तीन विषयों की खोज करेगा। पहला, हम उसके भविष्यद्ववाणीय कार्य की पुराने नियम की भूमिका की जाँच करेंगे। दूसरा, हम यीशु में इस कार्य की पूर्णता पर नए नियम की शिक्षाओं की खोज करेंगे। और तीसरा, हम यीशु के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भविष्यद्ववाणीय कार्य के आधुनिक प्रयोग पर ध्यान देंगे। आइए, हम यीशु के भविष्यद्ववाणीय कार्य की पुराने नियम की पृष्ठभूमि के साथ आरंभ करें।

पुराने नियम की पृष्ठभूमि

जब कभी भी हम मसीही यीशु को अपने भविष्यद्वक्ता के रूप में सोचते हैं, तो यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वह ऐसा पहला भविष्यद्वक्ता नहीं था जिसने परमेश्वर और उसकी वाचा की सेवा की थी। बाइबल के पूरे इतिहास में, परमेश्वर के हजारों भविष्यद्वक्ता हुए हैं। वे सामर्थ्य और अधिकार में यीशु के समान नहीं थे। परंतु परमेश्वर के प्रति उनकी सेवकाइयों ने उन सब बातों का एक पूर्वाभास प्रदान किया जिनमें यीशु ने राज्य के इस कार्यभार को पूरा किया है। इसलिए यदि हम यह समझना चाहते हैं कि यीशु ने भविष्यद्वक्ता होने के रूप में क्या किया, तो हमारे लिए उन भविष्यद्वक्ताओं से आरंभ करना सहायक होगा जो उससे पहले आए।

यीशु के भविष्यद्ववाणीय कार्य की पुराने नियम की पृष्ठभूमि के बारे में हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। पहला, हम भविष्यद्वक्ता के कार्य की योग्यताओं का उल्लेख करेंगे। दूसरा, हम भविष्यद्वक्ताओं की कार्यप्रणाली को देखेंगे। और तीसरा, हम इस कार्य से की जाने वाली उन अपेक्षाओं पर विचार करेंगे जिनकी रचना पुराने नियम ने की है। आइए पहले हम भविष्यद्वक्ता के कार्य की योग्यताओं को देखें।

योग्यताएँ

जैसा कि हम पहले ही सुझाव दे चुके हैं, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की वाचा के राजदूत या संदेशवाहक थे। अपनी वाचा में परमेश्वर ने स्वयं को अपने लोगों के एक महान सम्राट के रूप में प्रकट किया, और उसके भविष्यद्वक्ताओं ने स्वर्ग के उसके राजकीय न्यायालय के राजदूतों या अधिकृत संदेशवाहकों के रूप में सेवा की। वे इस्राएल के लोगों और कई अन्य राष्ट्रों के लिए परमेश्वर के वचन को लेकर आए, और उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे अपने राजा के रूप में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

निसंदेह, इस्राएल के चारों ओर के बहुत से राष्ट्रों के पास उनके अपने भविष्यद्वक्ता भी थे जो सतही रूप से परमेश्वर के सच्चे भविष्यद्वक्ताओं के सामान दिखते थे। परंतु ये झूठे भविष्यद्वक्ता अपने झूठे देवताओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए छल, अंधविश्वास और दुष्ट शक्तियों का प्रयोग करते थे।

> बाइबल के दिनों में इस्राएल और उसके चारों ओर के अन्य राष्ट्रों के झूठे भविष्यद्वक्ता सच्चे भविष्यद्वक्ताओं के जैसे ही कार्य करते और वचनों को बोलते थे एवं उनके समान ही दिखते और व्यवहार करते थे। परंतु इन सबसे बढ़कर मैं यह सोचता हूँ कि जब आप बाइबल की इन पुस्तकों जैसे राजाओं और इतिहास की और अन्य भविष्यद्वाणियों की पुस्तकों को देखते हैं तो जो बात सामने निकल कर आती है वह यह सच्चाई है कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता स्वयं को सच्चे भविष्यद्वक्ताओं के रूप में अन्यों से अलग करते थे क्योंकि वे प्रभु के नाम में बोलते हैं। और जब वे प्रभु के नाम में बोलते हैं, तो वे उन बातों का उल्लंघन नहीं करते जो परमेश्वर ने अपने वचन में कहा है। वे उनका उल्लंघन भी नहीं करते जो अन्य सच्चे भविष्यद्वक्ताओं ने कहा है, और वे स्वयं को इस तरह से अलग कर

> लेते थे। मैं सोचता हूँ कि एक और बात जो बहुत महत्वपूर्ण है, वह यह है कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता सामान्यतः ऐसे लोग थे जो लोकप्रिय धारणाओं के विरुद्ध खड़े हुए और, दुखद रूप से, विशेषकर उत्तरी इस्राएल में। वहाँ एक ऐसा समय था जब भविष्यद्वक्ताओं को नौकरी देकर काम पर रखा जाता था। जब आमोस 7 में आमोस कहता है, "मैं न तो भविष्यद्वक्ता हूँ, न भविष्यद्वक्ता का बेटा," तो वह उत्तरी राज्य के महायाजक को यह कह रहा था कि वह वास्तव में न तो राजा और न ही महाजायक से नौकरी लेकर काम कर रहा है। "मैं भविष्यद्वक्ता नहीं हूँ," का अर्थ है कि वह एक पेशेवर भविष्यद्वक्ता नहीं था, "न ही मैं भविष्यद्वक्ता का बेटा हूँ" का अर्थ यह है "न ही मैं भविष्यद्वाणी सिखाए जाने वाले किसी विद्यालय में हूँ। और इसलिए तुम मुझे नहीं कह सकते कि मुझे क्या करना है।" और आमोस द्वारा यह कहने का कारण यह है कि महायाजक उससे यह कहता है, "अपने घर जाओ और हमें जो उत्तर में हैं, परेशान करना बंद करो; वापस दक्षिण को चले जाओ।" और आमोस कहता है, "मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि परमेश्वर ने मुझे ऐसा करने की आज्ञा दी है।" और हम अक्सर ऐसा पाते हैं जैसे कि यिर्मयाह, मीका और अन्य भविष्यद्वक्ता वास्तव में इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं का सामना करते हैं जिन्हें राजा ने नौकरी पर रखा हुआ है। यदि कोई एक बात हम भविष्यद्वक्ताओं के बारे में सामाजिक रूप से कह सकते हैं, तो वह यह है : वे राजाओं के द्वारा नौकरी पर रखे हुए नहीं हैं। वे याजकों के द्वारा नौकरी पर रखे हुए नहीं हैं। वे विशेषकर याजकों और राजाओं जैसे लोगों द्वारा की जाने वाली बुराई और अपराधों और दुर्व्यवहारों के विरुद्ध परमेश्वर के गवाह के रूप में खड़े हैं।
>
> — डॉ. रिचर्ड एल. प्रैट, जूनियर

ऐसे संसार में जहाँ बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता थे, इस्राएलियों के लिए यह महत्वपूर्ण था कि वे परमेश्वर के सच्चे भविष्यद्वक्ताओं और झूठे भविष्यद्वक्ताओं के बीच के अंतर को समझने में सक्षम हों। इसी कारण से, पुराने नियम ने परमेश्वर के सच्चे भविष्यद्वक्ताओं की कई योग्यताओं को दर्शाया है।

इन माँगों का उल्लेख व्यवस्थाविवरण 18:17-22 में किया गया है, जहाँ मूसा ने ये शब्द लिखे हैं :

> तब यहोवा ने मुझ से कहा . . . "मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूँगा और अपना वचन उसके मुँह में डालूँगा, और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूँगा वही वह उनको कह सुनाएगा . . . परंतु जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से कोई ऐसा वचन कहे जिसकी आज्ञा मैं ने उसे न दी हो, या पराए देवताओं के नाम से कुछ कहे, वह नबी मार डाला जाए . . . जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे, तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह वचन यहोवा का नहीं हुआ।" (व्यवस्थाविवरण 18:17-22)

इस अनुच्छेद में हम परमेश्वर के एक सच्चे भविष्यद्वक्ता की कम से कम चार योग्यताओं को देख सकते हैं। जैसा कि मूसा ने यहाँ सिखाया है, सच्चे भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर द्वारा बुलाया गया था। उन्हें लोगों से बोलने के लिए परमेश्वर के वचन दिए गए थे। उन्होंने उसकी आज्ञाओं के अनुसार केवल उसके नाम में बोलने के द्वारा परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को प्रदर्शित किया। और उनकी सेवकाई उनके संदेश की पूर्णता के द्वारा प्रमाणित हुई।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की योग्यताओं के विषय में हमारा अध्ययन उन चारों माँगों पर केंद्रित होगा जिनका उल्लेख मूसा ने यहाँ किया है : पहला, सच्चे भविष्यद्वक्ताओं की बुलाहट परमेश्वर के द्वारा होनी आवश्यक थी। दूसरा, उन्हें बोलने के लिए परमेश्वर द्वारा वचन दिए जाने आवश्यक थे। तीसरा, उन्हें केवल परमेश्वर की आज्ञानुसार बोने के द्वारा उसके प्रति विश्वासयोग्य रहना आवश्यक था। और चौथा, उनकी सेवकाई को उनके संदेशों की पूर्णता के द्वारा प्रमाणित होना आवश्यक था। हम और अधिक विवरण के साथ इनमें से प्रत्येक कसौटी को देखेंगे। हम इस वास्तविकता के साथ आरंभ करेंगे कि सच्चे भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के द्वारा बुलाया जाता था।

परमेश्वर द्वारा बुलाया जाना

पुराने नियम में परमेश्वर ने बहुत से लोगों को भविष्यद्वक्ताओं के रूप में सेवा करने के लिए बुलाया। यह बुलाहट एक निमंत्रण नहीं थी; यह ईश्वरीय बुलावे थे। ईश्वरीय राजा परमेश्वर ने अपने नागरिकों में से एक व्यक्ति को अपने राजदूत के रूप में उसकी अपनी सेवा करने के लिए बुलाया। पुराना नियम जब भी भविष्यद्वक्ता की बुलाहट का वर्णन करता तो हम वहाँ इस ईश्वरीय बुलावे को पाते हैं।

उदाहरण के लिए, यहेजकेल 2:1-2 में यहेजकेल की बुलाहट पर ध्यान दें :

> और उसने मुझ से कहा, "हे मनुष्य की सन्तान अपने पाँवों के बल खड़ा हो, और मैं तुझ से बातें करूँगा।" जैसे ही उस ने मुझ से यह कहा, त्योंही आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पाँवों के बल खड़ा कर दिया और जो मुझ से बातें करता था मैंने उसकी सुनी। (यहेजकेल 2:1-2)

यहाँ हम देखते हैं कि जब परमेश्वर ने यहेजकेल को खड़ा खड़े होकर और उसकी बातें सुनने की आज्ञा दी, तो उसने इस बात को सुनिश्चित करने के लिए अपने आत्मा को भी भेजा कि यहेजकेल इस कार्य को पूरा करे। भविष्यद्वक्ता की बुलाहट अपने लोगों के ईश्वरीय राजा होने के रूप में परमेश्वर के आधिकारिक चुनाव का क्रियान्वयन था।

परमेश्वर ने अक्सर भविष्यद्वक्ताओं को सीधे तौर पर ऐसी भविष्यद्वाणीय बुलाहटें दी हैं - अक्सर ऐसी जो सुनी जा सकें। परमेश्वर ने 1 शमूएल 3 में शमूएल को, यशायाह 6 में यशायाह को, आमोस 7 में आमोस को, और यिर्मयाह 1 में यिर्मयाह को सीधे तौर पर बुलाया।

परंतु अन्य समयों में, परमेश्वर ने अप्रत्यक्ष रूप से भविष्यद्वक्ताओं को बुलाया, दूसरे भविष्यद्वक्ता को बुलाने के लिए एक भविष्यद्वक्ता को निर्देश देने के द्वारा। उदाहरण के लिए, 1 राजा 19:16 में, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता एल्लियाह को आज्ञा दी कि वह अपने उत्तराधिकारी एलीशा को बुलाहट दे। सौंपी गई यह बुलाहट भविष्यद्वक्ताओं के उन समूहों या भविष्यद्वक्ताओं के उन पुत्रों पर भी प्रकाश डालती है जिन्हें 1 राजा 20 और 2 राजा 2 जैसे स्थानों में देखा जा सकता है, वे भविष्यद्वक्ताओं के ऐसे समूह थे जो ईश्वरीय रूप से बुलाए गए स्थापित भविष्यद्वक्ता पर केंद्रित थे। परंतु चाहे बुलाहट परमेश्वर की ओर से सीधे तौर पर भविष्यद्वक्ता के पास आई हो, या फिर परमेश्वर के अधिकारिक सेवक के द्वारा, फिर भी भविष्यद्वक्ता की बुलाहट अंततः प्रभु की पहल से ही आई। इस अलौकिक बुलाहट के बिना कोई भविष्यद्वक्ता नहीं बन सकता था, फिर चाहे उसके पास कितने भी भले इरादे, परमेश्वर के प्रति भक्ति, या परमेश्वर के वचन का ज्ञान ही क्यों न हो।

परमेश्वर के द्वारा बुलाए जाने के अतिरिक्त पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को बोलने के लिए परमेश्वर के वचन का दिया जाना भी आवश्यक था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर के वचन का दिया जाना

पवित्रआत्मा ने भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरित किया कि वे वही बोलें जिसकी परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा दी है। सच्चे भविष्यद्वक्ताओं ने जब भविष्यद्वाणी की तो वे इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कर पाए। परंतु जब हम पवित्रशास्त्र में विभिन्न भविष्यद्वक्ताओं के बोलने की तुलना करते हैं, तो हम देखते हैं कि ईश्वरीय प्रेरणा का अर्थ यह नहीं था कि भविष्यद्वक्ताओं का अपने वचनों पर कोई नियंत्रण नहीं था। इसके विपरीत पवित्र आत्मा ने भविष्यद्वक्ताओं के व्यक्तित्वों और दृष्टिकोणों का उचित प्रयोग किया जब उसने उनके द्वारा त्रुटिरहित रूप से भविष्यद्वाणीय संदेश को प्रस्तुत किया। इस तरह से, भविष्यद्वाणी की प्रेरणा बाकी सारे पवित्रशास्त्र की प्रेरणा के सदृश थी।

सुनिए किस प्रकार पतरस ने 2 पतरस 1:20-21 में पवित्र आत्मा द्वारा भविष्यद्वक्ताओं को दी गई प्रेरणा के बारे में कहा है :

> पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्द्वाणी किसी की अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। (2 पतरस 1:20-21)

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, पवित्र आत्मा ने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को संचालित किया। और इस बात ने आश्वस्त किया कि उनके शब्द अधिकारिक और त्रुटिरहित थे।

> पवित्र आत्मा ने उस विशेष भविष्यद्वक्ता के व्यक्तित्व और दृष्टिकोण के द्वारा कार्य किया जिसके साथ वह कार्य कर रहा था। मुझे लगता है कि धर्मवैज्ञानिक रूप से उसे समझने का पारंपरिक ढांचा "जैविक प्रेरणा" है, अर्थात् यह कि परमेश्वर अपने सेवकों, अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कार्य करता है, और अपने उद्देश्यों के लिए उनके व्यक्तित्वों, उनके विशेष दृष्टिकोणों, और उनकी शिक्षा और इसकी कमी का प्रयोग करता है। मुझे लगता है कि एक व्यक्ति पवित्रीकरण की धर्मशिक्षा और इस समझ का प्रयोग करने के बारे में भी सोच सकता है कि कैसे परमेश्वर उन बातों को लेता है जो कि मानवीय, सांसारिक और भौतिक हैं, और उन्हें अपने द्वारा प्रयोग करने के उद्देश्यों के लिए पवित्र करता है, और वह अपने भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही करता है। ऐसा कहने के बाद भी मैं सोचता हूँ कि भविष्यद्वाणीय साहित्य में ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ पर आप परमेश्वर को वास्तव में भविष्यद्वक्ता से लिखवाते हुए देखते हैं, जैसे "तुम्हें जाकर लोगों से यह कहना है," और यशायाह या यिर्मयाह या यहेजकेल, वे जाते हैं और कहते हैं। इस प्रकार, भविष्यद्वाणीय साहित्य में ऐसे विषय हैं, जहाँ परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ता से लिखवाएगा, परंतु साथ ही, परमेश्वर उन्हें वैसे प्रयोग करता है जैसे वे हैं, और उसने इस्राएल, प्राचीन इस्राएल और कलीसिया के लिए अपने भविष्यद्वाणीय कार्य की रचना करने में उनके व्यक्तित्वों को दबा नहीं दिया।
>
> — डॉ. मार्क गिगनिलियत

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की तीसरी योग्यता यह थी कि उन्हें अपनी भविष्यद्वाणियों को व्यवस्था के समरूप बनाने के द्वारा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना

यद्यपि भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर से केवल सुन-सुनकर ही नहीं लिखा, फिर भी पवित्र आत्मा ने उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार बोलने की पूरी आजादी नहीं दी। उन्हें न केवल वह बोलना था जिसकी आज्ञा उन्हें परमेश्वर ने दी थी, बल्कि उन्हें यह भी सुनिश्चित करना था कि उनकी भविष्यद्वाणियाँ परमेश्वर के वर्तमान प्रकाशन के साथ सहमत हों, विशेषकर जिनका वर्णन पवित्रशास्त्र में किया गया था।

व्यवस्थाविवरण 13:1-14 में मूसा के शब्दों को सुनें :

> यदि तेरे बीच में कोई भविष्यद्वक्ता . . . चिन्ह व चमत्कार की घोषणा करे, और यदि वे चिन्ह और चमत्कार जिनके बारे में उसने बोला है होने लगें, और वह कहने लगे कि, "आओ हम अन्य देवताओं के पीछे चलें . . . और उनकी आराधना करें," तो तुम उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखने वाले की न सुनना . . . तुम केवल अपने परमेश्वर यहोवा के ही पीछे चलना, और केवल उस का ही सम्मान करना, उसके आदेश को मानना और उसकी आज्ञा का पालन करना; उसकी सेवा करना और उससे ही लिपटे रहना। (व्यवस्थाविवरण 13:1-14)

मूसा ने यहाँ महत्वपूर्ण बात सिखाई है : यद्यपि कोई भविष्यद्वक्ता आश्चर्यकर्म करे और भविष्य के बारे में बताए, फिर भी उसका इनकार किया जाना चाहिए यदि उसकी शिक्षाएँ परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करें।

हम विलापगीत 2:13-14 में इसी बात पर दिए गए बल को पाते हैं, जहाँ यिर्मयाह इस बात पर दुखी हुआ कि इस्राएल के झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने राष्ट्र को गलत मार्ग पर भटका दिया था। यिर्मयाह ने कहा कि इन भविष्यद्वक्ताओं ने "अधर्म को प्रकट नहीं किया," अर्थात् उन्होंने लोगों द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था के उल्लंघन को उचित ठहरा दिया था। लोगों को परमेश्वर की वाचा के प्रति उत्तरदाई ठहराने की अपेक्षा उन्होंने अवज्ञाकारिता को प्रोत्साहित किया था। और इस प्रकार उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि वे झूठे भविष्यद्वक्ता थे।

अंततः, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की चौथी योग्यता यह थी कि उनकी भविष्यद्वाणियों को पूर्णता के द्वारा प्रमाणित होना आवश्यक था। अर्थात् उनकी भविष्यद्वाणियों का पूरा होना आवश्यक था।

पूर्णता के द्वारा प्रमाणित होना

व्यवस्थाविवरण 18:22 में मूसा के शब्दों को सुनें:

> जब कोई भविष्यद्वक्ता यहोवा के नाम से कुछ कहे, तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं है। परंतु उस भविष्यद्वक्ता ने यह बात अभिमान करके कही है, तू उस से भय न खाना। (व्यवस्थाविवरण 18:22)

परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के सारे वचन विश्वास करने योग्य थे क्योंकि वे सटीकता के साथ परमेश्वर के शब्दों से प्रसारित थे, जिसका चरित्र और वाचाई प्रतिज्ञाएँ पूरी तरह से विश्वासयोग्य हैं। सच्ची भविष्यद्ववाणियाँ कभी असफल नहीं होतीं, क्योंकि परमेश्वर के पास सामर्थ्य और अधिकार है कि वह जैसे चाहे उन्हें पूरा करे, क्योंकि वह अपने वचन को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

कई बार, भविष्यद्वाणियाँ शीघ्र पूरी होने के द्वारा प्रमाणित होती थीं। उदाहरण के लिए, 1 राजा 17:1 में, भविष्यद्वक्ता एलिय्याह ने घोषणा की कि जब तक वह न कहे तब तक न तो वर्षा होगी और न ही ओस गिरेगी। और जैसा कि हम 1 राजा 18 में देखते हैं, परमेश्वर द्वारा सूखे को अंततः समाप्त करने से

पहले तीन सालों तक सूखा पड़ा रहा। और 2 राजा 7:17-20 में हम एलीशा की इस भविष्यद्वाणी की तुरंत पूर्णता को पाते हैं कि राजा का अधिकारी मर जाएगा।

अन्य समयों में, भविष्यद्वाणी तुरंत पूरी नहीं हुई। उदाहरण के लिए, 930 ई. पू. में एक सच्चे भविष्यद्वक्ता ने योशिय्याह के जन्म के बारे में भविष्यद्वाणी की थी, जो दाऊद के घराने का विश्वासयोग्य उत्तराधिकारी होगा। इस भविष्यद्वाणी का वर्णन 1 राजा 3:2 में किया गया है। परंतु जिसके बारे में भविष्यद्वाणी की गई थी उस योशिय्याह नामक बच्चे का जन्म 630 ई. पू. तक नहीं हुआ - भविष्यद्वाणी के लगभग 300 साल बाद तक - जैसा कि हम 2 राजा 22:1 में पढ़ते हैं। और यीशु के जन्म की भविष्यद्वाणी को पूरा होने में तो और भी ज्यादा समय लगा।

अब, इस स्थान पर हमें इस बात का उल्लेख करने के लिए रूकना चाहिए कि कई बार सच्चे भविष्यद्वक्ताओं के शब्द भी उस रीति से पूरे नहीं हुए जैसे उन्होंने कहे थे। परंतु मूसा कि शिक्षा के प्रकाश में, यह कैसा हो सकता था? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि जब हम पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को पढ़ते हैं तो हम उनके पूर्वानुमानों के एक गलत प्रभाव को पाते हैं। यद्यपि कई लोग ऐसा सोचते हैं कि भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्य के बारे में वैसा वैसी ही सटीकता के साथ बताया है जैसा वह होगा, परंतु वास्तविकता में हर बार ऐसा नहीं हुआ था।

अधिकांशतः भविष्यद्वक्ताओं ने उन श्रापों के बारे में चेताया जो तब आएँगे यदि लोग पाप में बने रहते हैं, और उन्होंने आशीषों के लिए प्रस्ताव भी दिए जो तब आएँगी जब लोग विश्वासयोग्ता के साथ व्यवहार करेंगे। इन भविष्यद्वाणियों का लक्ष्य लोगों को इस बात के प्रति उत्साहित करना था कि वे अपने पापों से पश्चाताप करें और परमेश्वर और उसकी वाचा के प्रति विश्वासयोग्यता बनाए रखें। केवल तब ही उनकी भविष्यद्वाणियाँ पूरी हुईं जब सच्चे भविष्यद्वक्ताओं ने दर्शाया कि परमेश्वर ने कुछ करने की शपथ खाई है।

फलस्वरूप, भविष्यद्वाणी के पूरा होने के लिए एक वैधानिक तरीका यह था कि लोग अपने व्यवहार में बदलाव लाएँ और इस तरह से भविष्यद्वाणियों के परिणामों को प्रभावित करें। ऐसे विषयों में, भविष्यद्ववाणियाँ वास्तव में ठीक तरह से पूरी हुईं, यद्यपि उनकी चेतावनियों या प्रस्तावों का परिणाम वैसा नहीं निकला जैसा कहा गया था।

पवित्रशास्त्र में ऐसे काफी सारे उदाहरण हैं, परंतु मुख्य सिद्धांत का वर्णन यिर्मयाह 18:7-10 में किया गया है, जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि उसे उखाड़ूँगा या ढा दूँगा अथवा नाश करूँगा, तब यदि उस जाति के लोग जिसके जिनके विषय मैंने यह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मै उन पर डालने को ठाना है, पछताऊँगा; और जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूँ कि मैं उसे बनाऊँगा और रोपूँगा, तब यदि वे उस काम को करें जो मेरी दृष्टि में बुरा है और मेरी बात न मानें, तो मैं उस भलाई के विषय जिसे मैंने उनके लिए करने को कहा है, पछताऊँगा। (यिर्मयाह 18:7-10)

यहाँ पर एक सिद्धांत है जिसकी घोषणा हमारे लिए यिर्मयाह 18 में की गई है जहाँ परमेश्वर प्रभावशाली तरीके से कहता है, “जब मैं किसी जाति के विषय कहूँ कि उसे नाश करूँगा, तब यदि उस जाति के लोग अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मै ने उन पर डालने को ठाना ठानी है पछताऊँगा।” और इसके विपरीत भाव को भी बताया गया है, “और यदि मैं किसी जाति या राजा या राष्ट्र के विषय आशीष की प्रतिज्ञा करूँ, तब यदि वे मेरी आज्ञाओं को मानना छोड़ दें तो मैं उस भलाई के कारण जिसकी प्रतिज्ञा की थी उसके बदले दंड

> दूंगा।" और फिर यह सिद्धांत इस प्रकार से कार्य करता है कि यह परिस्थिति यहाँ स्पष्ट रूप से बताई गई है, और अन्य अनुच्छेदों में इसे इन रूपों में स्पष्ट रूप से दिखाया गया, विशेषकर उन अनुच्छेदों में जहाँ परमेश्वर दंड की चेतावनी दे रहा है या आशीष की प्रतिज्ञा कर रहा है, और शायद सबसे अच्छा उदाहरण योना की पुस्तक में है, जहाँ परमेश्वर योना को नीनवे के लोगों पर दंड की घोषणा के लिए भेजता है। योना यह करता है और नीनवे के लोग मानवीय पश्चाताप की कसौटी को दर्शाते हैं और पश्चाताप करते हैं, जिससे ऐसा जान पड़ता है कि परमेश्वर पहले से ही उनके दिलों में क्या उत्पन्न करने का प्रयास कर रहा था।
>
> — डॉ. रॉब लिस्टर

किसी न किसी तरह से, सच्चे भविष्यद्वक्ता के वचन सदैव पूरे होते हैं। कई बार वे ठीक वैसे ही पूरे होते हैं जैसे वे कहे जाते हैं। अन्य समयों में, मनुष्य भविष्यद्वाणियों के प्रति उचित प्रतिक्रिया देते हैं और इससे एक भिन्न परिणाम निकलता है। परंतु जैसा भी हो, सच्ची भविष्यद्वाणी के परिणाम परमेश्वर की वाचा और उसके चरित्र के अनुरूप होते हैं और वे उसके सच्चे भविष्यद्वक्ता होने की सेवकाई को प्रमाणित करते हैं।

मूसा ने भविष्यद्वाणीय कार्य की योग्यताओं का वर्णन इस प्रकार से किया है कि परमेश्वर के लोग यह पहचान लें कि कौनसे भविष्यद्वक्ता ने सच्चाई के साथ परमेश्वर की ओर से बोला है। उसने ऐसा इसलिए किया कि वह चाहता है था कि वे सच्चे भविष्यद्वक्ताओं को पहचान लें और उनके संदेशों को मानें, और परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासयोग्यता के साथ जीवन जीएँ। और हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम इन योग्यताओं को अपने मन में रखें, क्योंकि ये वही योग्यताएँ हैं जिन्हें यीशु ने तब पूरा किया जब उसने नए नियम के युग में परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता के रूप में सेवा की।

अब जबकि हमने भविष्यद्वक्ताओं की योग्यताओं को देख लिया है, हम उनके कार्यभार की कार्यप्रणाली पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं।

कार्यप्रणाली

हम भविष्यद्वक्ताओं की कार्यप्रणाली के तीन पहलुओं का उल्लेख करेंगे। पहला, हम उनके अधिकार के बारे में बात करेंगे। दूसरा, हम उनके कार्य का उल्लेख करेंगे। और तीसरा, हम उन विधियों को देखेंगे जिनका प्रयोग वे इस कार्य को करने के लिए कहते हैं। आइए सबसे पहले उनके अधिकार को देखें।

अधिकार

जैसा कि हमने इस अध्याय के आरंभ में उल्लेख किया है, एक भविष्यद्वक्ता :

> परमेश्वर की वाचा का राजदूत है, जो परमेश्वर के वचन की घोषणा करता है और उसे लागू करता है, विशेषकर पाप के विरूद्ध दंड की चेतावनी देने, और परमेश्वर के प्रति ऐसी विश्वासयोग्य सेवा करने के लिए उत्साहित करता है जो उसकी आशीषों को ओर ले चलती है।

पुराने नियम में परमेश्वर एक महान राजा के रूप में प्रस्तुत किया गया था जो अपने लोगों पर वाचाओं के द्वारा राज्य करता था। और उसके भविष्यद्वक्ता इन वाचाओं के राजदूत थे जो उस बात की व्याख्या करते थे जो परमेश्वर ने उनके समक्ष स्वर्गीय न्यायालय में प्रकट किया थाकी थी।

प्राचीन मध्य पूर्व में, शक्तिशाली सम्राट या "सुज़ेरियन" अक्सर छोटे देशों या अपने "वासल राजाओं" पर दूर अपनी राजधानी से ही शासन करते थे। इन सम्राटों ने वासल राजाओं पर विशिष्ट रूप से एक संधि को थोपा हुआ था, जिसमें उनके संबंधों की शर्तों का वर्णन होता था। सामान्यतः बाइबल इस तरह की संधि को एक वाचा के रूप में दर्शाती है।

इन वाचाओं को संचालित करने के लिए सम्राटों ने राजदूतों को कार्य पर रखा था जो उनके नाम से बोलते थे और उनके अधिकार का प्रयोग करते थे। यह राजदूत का कार्य था कि वे वासल राष्ट्रों को संधि की शर्तों का स्मरण दिलाए, उन्हें उन श्रापों के बारे में चेतावनी दे जो उन पर तब आ सकते हैं यदि वे संधि की शर्तों के प्रति अविश्वासयोग्य रहें, और वासल राष्ट्रों को इन शर्तों का पालन करने को उत्साहित करे जिससे वे संधि की आशीषों को प्राप्त कर सकें।

इस प्राचीन मध्य पूर्व के इतिहास को जानना महत्वपूर्ण है क्योंकि पुराने नियम में परमेश्वर ने अक्सर अपने लोगों के साथ अपने संबंधों का वर्णन सम्राट-वासल राष्ट्रों के आधार पर किया है। और सम्राट होने के नाते, उसने भविष्यद्वक्ताओं को नियुक्त किया जिन्होंने अपने वासल लोगों को उसकी वाचा की शर्तों के बारे में स्मरण दिलाया।

क्योंकि भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के राजदूत थे, इसलिए उनके शब्दों को इस तरह से लिया जाना था कि मानो स्वयं परमेश्वर ने उन्हें बोला है। पवित्र आत्मा ने भी भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरित किया ताकि वे इस्राएल के लोगों के प्रत्युत्तर में परमेश्वर के विचारों और अभिप्रायों की घोषणा सटीक रूप में कर सकें। इस प्रकार, परमेश्वर ने सुनिश्चित किया कि उसके सारे भविष्यद्वक्ता जब उसका प्रतिनिधित्व करें तो सदैव अधिकारिक रूप से और सच्चाई के साथ बात करें।

> हम सच्चे भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को गंभीरता से क्यों लेते हैं? क्योंकि सच्चे भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के दूतों के रूप में उसके लिए बोलते हैं। अतः यदि हम उनके वचनों को गंभीरता से नहीं लेते, तो हम अपने हृदयों और कानों में खतनारहित हैं, जैसे कि बाइबल इसका वर्णन करती है। इसका अर्थ है कि हमारे हृदय अभी तक परिवर्तित नहीं हुए हैं। वास्तव में हम परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं। इस प्रकार, यदि हम भविष्यद्वक्ता के वचनों को सुनने से इनकार कर देते हैं, तो हम परमेश्वर के वचन को सुनने से इनकार कर देते हैं। और हम स्वयं परमेश्वर के विरुद्ध ही विद्रोह करते हैं। अतः यह एक बहुत ही गंभीर विषय है।
>
> — डॉ. पीटर चो, अनुवाद

भविष्यद्वाणीय अधिकार की इस समझ के साथ, आइए हम उस कार्य की ओर मुड़ें जो परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं को सौंपा है।

कार्य

भविष्यद्वक्ताओं के कार्य को समझने के लिए, आइए प्राचीन मध्य पूर्व की सुज़ेरियन-वासल संधियों को फिर से देखें। प्राचीन मध्य पूर्व में जब सुज़ेरियन या सम्राट वासल राष्ट्रों पर वाचाओं को थोपते थे, तो ये वाचाएँ उनके बीच की व्यवस्थाओं के विवरण को दर्शाती थीं। उनमें ये बातें होती थीं : अतीत में सुज़ेरियन या सम्राट द्वारा किया गया उपकार, अर्थात्, वे भले काम जो सुज़ेरियन या सम्राट ने वासल राष्ट्र के लिए पहले से ही किए हैं; वह विश्वासयोग्यता जो वासल राष्ट्र को सुज़ेरियन या सम्राट के प्रति दिखानी थी, उनमें बहुत सी शर्तें शामिल थीं जिनका अनुसरण वासल राष्ट्र को करना था; और वे परिणाम जो वासल द्वारा संधि का पालन करने या फिर उसका उल्लंघन करने के द्वारा आएँगे, वासल राष्ट्र

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

के लिए आशीषें आएँगीं यदि वह संधि की शर्तों का पालन करेगा या फिर उसको दंड मिलेगा यदि वह उसका उल्लंघन करेगा।

और इसी प्रकार के पहलू वाचाई लोगों के साथ परमेश्वर के संबंध पर भी लागू होते थे। इसलिए परमेश्वर के वाचाई राजदूतों के रूप में, भविष्यद्वक्ताओं को यह कार्य दिया गया था कि वे परमेश्वर के लोगों को उसकी वाचा के विवरणों का स्मरण दिलाएँ, जिसमें वे इसकी शर्तों का पालन करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु उन्हें दंड की चेतावनी और आशीषों की प्रतिज्ञाएँ दें।

जब इस्राएल परमेश्वर के सामने अच्छे संबंध में खड़ा होता था, तो भविष्यद्वक्ताओं ने उन्हें उनके कार्यों के परिणामों का स्मरण दिलाया ताकि वे अपनी विश्वासयोग्यता में बने रहें। उदाहरण के लिए, हम यिर्मयाह 7:5-7, 21:12 और 22:4-5 में इसके उदाहरणों को देखते हैं।

परंतु जब इस्राएल परमेश्वर के सामने वाचा की शर्तों के प्रति गंभीर या लंबी अवज्ञाकारिता के कारण अच्छे संबंध में खड़ा नहीं होता था, तो भविष्यद्वक्ताओं ने उन पर विद्रोह और अविश्वासयोग्यता का दोष लगाया। उन्होंने इस्राएल के पापों का वर्णन किया और लोगों को वाचाई श्रापों का स्मरण दिलाया ताकि वे उन्हें पश्चाताप के लिए प्रेरित कर सकें। हम इसके उदाहरण यिर्मयाह 8 और आमोस 4:1-3 में देखते हैं। और कई विषयों में, भविष्यद्वक्ताओं ने इस्राएल के लिए आशीषों का प्रस्ताव भी दिया, यदि वह राष्ट्र पश्चाताप की माँग को पूरा करता है। हम इस तरह की भविष्यद्वाणी योएल 2:12-27 और कई अन्य स्थानों में देखते हैं।

अब जबकि हमने बाइबल के भविष्यद्वक्ताओं के अधिकार और कार्य को देख लिया है, इसलिए हमें संक्षेप में उन विधियों का उल्लेख भी करना चाहिए जिनका प्रयोग उन्होंने अपने कार्य को पूरा करने के लिए किया।

विधियाँ

निःसंदेह, भविष्यद्वक्ताओं ने अपने कार्य को करने के लिए जिस सबसे सामान्य विधि का प्रयोग किया वह थी, बोलना। भविष्यद्वक्ताओं ने मुख्यतः लोगों के समक्ष परमेश्वर के वचनों की घोषणा करने के द्वारा अपने कार्य को पूरा किया। उन्होंने लोगों को पाप के लिए दोषी ठहराया, उन्हें आज्ञापालन करने की आज्ञा दी, दृढ़ता से आगे बढ़ने के लिए उत्साहित किया, दंड की चेतावनी दी, और आशीषों की प्रतिज्ञा की। उन्होंने दृष्टांत कहे। उन्होंने भविष्य के बारे में बताया। उन्होंने प्रार्थना की। और उन्होंने परमेश्वर के लोगों के लिए मध्यस्थता भी की। हम इसे पवित्रशास्त्र में सैंकड़ों बार देखते हैं। इससे बढ़कर, कई भविष्यद्वक्ताओं ने अपने वचनों को लिखा भी, इसी कारण हम बाइबल में भविष्द्ववाणी की बहुत सी पुस्तकों और अन्य लेखों को पाते हैं।

परंतु भविष्यद्वक्ताओं ने अन्य विधियों का भी प्रयोग किया जो मौखिक घोषणाओं की तुलना में विशेष कार्यों पर अधिक निर्भर थीं। उदाहरण के लिए, पवित्र आत्मा ने कुछ भविष्यद्वक्ताओं को भविष्यद्ववाणीय चिह्नों और अद्‌भुत कार्यों को करने की सामर्थ्य दी। सामर्थ्य के इन अद्‌भुत कार्यों ने परमेश्वर के राजदूतों के रूप में भविष्यद्वक्ताओं की वैधानिकता की गवाही दी, और उन चेतावनियों और प्रतिज्ञाओं का समर्थन करने में परमेश्वर के अभिप्राय को दर्शाया जिनकी घोषणा भविष्यद्वक्ताओं ने घोषणा की थी।

एक उदाहरण के रूप में, भविष्यद्वक्ता मूसा ने यहोवा की इच्छा की घोषणा इस्राएलियों और मिस्रियों दोनों के समक्ष की, और उसके वचनों के साथ अनगिनित आश्चर्यकर्म और चिह्न प्रकट हुए, जैसे कि मिस्र के ऊपर दस विपत्तियों का आना, लाल समुद्र का दो भागों में बँटना, और निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, और गिनती की पुस्तकों में निहित अन्य कई आश्चर्यकर्म। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के इन कार्यों ने गवाही दी कि मूसा एक सच्चा भविष्यद्वक्ता था, और उसने मिस्रियों और इस्राएलियों को आज्ञापालन करने की चेतावनी दी थी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भविष्यद्वक्ता एलिय्याह और एलीशा की सेवकाइयों में भी बहुत सी आश्चर्यजनक घटनाएँ सम्मिलित थीं, जैसा कि हम 1 राजा 17 से लेकर 2 राजा 13 तक देखते हैं। भविष्यद्वक्ता शमूएल ने भी आश्चर्यकर्म किए थे, जैसे कि 1 शमूएल 12 में गर्जन और वर्षा को लाना। और 1 राजा 13 में एक बेनाम भविष्यद्वक्ता ने राजा यारोबाम के हाथ को सुखाने का एक आश्चर्यजनक चिह्न दिखाया था।

आश्चर्यकर्मों के अतिरिक्त कई भविष्यद्वक्ताओं ने ऐसे प्रतीकात्मक कार्यों को भी किया जिन्होंने उनके मौखिक संदेशों को प्रमाणित किया। और वे आत्मिक संघर्ष में भी लगे रहे जब उन्होंने परमेश्वर के लोगों से आग्रह किया वे उसकी वाचा की शर्तों का पालन करें।

भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के वाचाई दूतों के रूप में देखना हमें यह समझने में सहायता करता है कि बाइबल की श्राप की चेतावनियाँ और आशीषों के प्रस्ताव परमेश्वर और उसके लोगों के बीच के वाचाई संबंध पर आधारित हैं। परमेश्वर अपने लोगों के साथ अपने व्यवहार में स्वेच्छाचारी नहीं है; वह बेहद अप्रत्याशित ढंग से कार्य नहीं करता। इसकी अपेक्षा, वह अपनी वाचा की शर्तों के पालन किए जाने पर जोर देता है – और ये शर्तें गुप्त नहीं हैं। वह बड़ी उदारता से हमें अपनी व्यवस्था देता है, और उसने हमें यह दिखाने के लिए अपने राजदूतों को भेजा है कि हम हमारी अपनी बदलती परिस्थितियों में इसे कैसे लागू करें। परमेश्वर अपने लोगों के लिए यह समझना सरल बना देता है कि उसकी माँग क्या है, क्योंकि वह चाहता है कि हम उसके समक्ष विश्वासयोग्ता से चलें, उसकी आशीषों का अनुभव करें, और उसके राज्य के लिए उसके उद्देश्यों को पूरा करें।

अब जबकि हमने भविष्यद्वक्ता के कार्यभार की योग्यताओं और कार्यप्रणाली को देख लिया है, इसलिए आइए अब हम उन अपेक्षाओं की ओर अपना ध्यान लगाएँ जिन्हें पुराने नियम ने भविष्य की भविष्यद्वाणीय सेवकाइयों के लिए उत्पन्न कर दी थीं।

अपेक्षाएँ

भविष्य के लिए भविष्यद्वक्ता के कार्य की पुराने नियम की अपेक्षाएँ मूलभूत रूप से दो प्रकार की थीं। एक ओर, कुछ अपेक्षाएँ इस कार्यभार के ऐतिहासिक विकास की प्रकृति के द्वारा उत्पन्न हुई थीं। दूसरी ओर, अन्य अपेक्षाएँ भविष्य के भविष्यद्वक्ताओं से संबंधित विशेष भविष्यद्ववाणियों के द्वारा उत्पन्न हुई थीं। हम दोनों प्रकार की अपेक्षाओं पर ध्यान देंगे। हम उन अपेक्षाओं के साथ आरंभ करेंगे जो भविष्यद्वक्ता के कार्यभार के ऐतिहासिक विकास पर आधारित हैं।

ऐतिहासिक विकास

क्योंकि मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर का संबंध सदैव उसकी वाचा के द्वारा संचालित हुआ है, इसलिए भविष्यद्वक्ताओं के लिए सदैव एक भूमिका रही है कि वे लोगों को उन वाचाओं की शर्तों का स्मरण दिलाएँ। परंतु संपूर्ण इतिहास में, यह भूमिका कभी कभी बदलती रही है। जैसे जैसे परमेश्वर का राज्य बदला है और पूरे इतिहास में विकसित हुआ है, वैसे वैसे भविष्यद्वक्ता की भूमिका भी इसकी बदलती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए व्यवस्थित होती रही है।

हम इतिहास के चार विभिन्न चरणों के दौरान भविष्यद्वक्ता की भूमिका पर ध्यान देंगे। हम इस्राएल में राजा होने से पूर्व के लंबे इतिहास के साथ आरंभ करेंगे, जिसे हम “राजतंत्र से पूर्व” कहेंगे।

राजतंत्र से पूर्व। यह ऐसी समयावधि है जो आदम, नूह, अब्राहम और मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा के सामानांतर है। राजतंत्र से पूर्व की अवधि के आरंभ में परमेश्वर का राज्य बाकी के संसार से एक विशेष राष्ट्र के रूप में अलग नहीं किया गया था। और जब राष्ट्र अब्राहम के दिनों में अलग किया गया, तब भी इसके पास अपना कोई राजा नहीं था। इस समय पर, भविष्यद्वक्ताओं ने विभिन्न तरह के कार्यों को किया और उन्हें विभिन्न तरह के शीर्षकों से संबोधित किया जाता था। सामान्यतः हम कह सकते हैं कि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उन्होंने परमेश्वर के साथ बातचीत की, दर्शनों को प्राप्त किया और मनुष्यजाति को परमेश्वर की वाचाओं के प्रति उत्तरदाई ठहराया।

उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर ने इस संसार की रचना की तो उसने आदम और हव्वा से सीधे-सीधे बातचीत की; उन्होने परमेश्वर के साथ चलने और बातचीत करने के द्वारा उसके प्रकाशनों को प्राप्त किया, जैसा कि हम उत्पत्ति 2-3 में पढ़ते हैं। उन्होने अपने बच्चों को परमेश्वर के बारे में सिखाने के द्वारा अपनी भविष्यद्वाणीय भूमिका को पूरा किया। और उनकी कुछ संतानों के पास भी परमेश्वर के साथ ऐसा ही संबंध था, जैसे कि हनोक जिसका उल्लेख उत्पत्ति 5:24 में किया गया है।

नूह के दिनों में परमेश्वर ने नूह से भी सीधे-सीधे बातचीत की, जैसा कि हम उत्पत्ति 6-9 में पढ़ते हैं। परंतु उसने नूह को संसार के विरुद्ध वाचाई दंड की भविष्यद्वाणी करने के लिए भी बुलाया क्योंकि इसने उसके विरूद्ध बहुत पाप किया था, जैसा कि पतरस ने 2 पतरस 2:5 में सिखाया है। इससे भी बढ़कर, नूह ने उसके संदेश की पुष्टि करने के लिए जहाज को बनाने और इसे जानवरों से भरने के सार्वजनिक भविष्यद्वाणीय कार्य को पूरा किया।

परमेश्वर ने अब्राहम से भी सीधे-सीधे बातचीत की, और भविष्य की योजनाओं को उस पर प्रकट किया। परमेश्वर के साथ उसकी बातचीत और अन्य लोगों को उन बातों के बारे में बताने के द्वारा अब्राहम ने भविष्यद्वाणीय भूमिका में सेवा की जिसका उल्लेख उत्पत्ति 20:7 जैसे स्थानों पर किया गया है। अब्राहम की संतान इसहाक, याकूब और यूसुफ ने भी परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के रूप में सेवा की। उन्होंने परमेश्वर से स्वप्नों और दर्शनों और को प्राप्त किया और स्वर्गदूतों से संदेशों को प्राप्त किया। इनमें से प्रत्येक भविष्यद्वक्ता ने लोगों के समक्ष परमेश्वर के वचन की घोषणा करने के द्वारा और प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहने के प्रोत्साहन को देने के द्वारा उन्हें परमेश्वर की वाचा के प्रति उत्तरदाई ठहराया।

मूसा के दिनों में हम राजतंत्र से पूर्व के समय में भविष्यद्वाणीय कार्य की एक और महत्वपूर्ण अवधि को पाते हैं। गिनती 12:6 के अनुसार मूसा स्वयं इस समय का परमेश्वर का अग्रणी भविष्यद्वक्ता था। इतिहास के इस समय में परमेश्वर ने निर्गमन 20-23 में दस आज्ञाओं और वाचा की पुस्तक के रूप में अपने लोगों को एक लिखित वाचा प्रदान की। और यह मूसा की जिम्मेदारी थी कि वह लोगों के समक्ष इसकी व्याख्या करने, इसकी शर्तों के अनुसार उसका संचालन करने, और उन्हें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनने का उपदेश देने के द्वारा इस वाचा का संचालन करे ताकि वे वाचाई श्रापों को नहीं बल्कि वाचाई आशीषों को प्राप्त कर सकें। मूसा के समकालीन और बाद में आए अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने इन कार्यों को करना जारी रखा, यद्यपि किसी की भी सेवकाई का कार्यक्षेत्र और प्रभाव मूसा की सेवकाई के समान नहीं था।

जहाँ भविष्यद्वक्ता का कार्य राजतंत्र से पूर्व के समय के दौरान बहुत विशाल था, वहीं यह राजतंत्र के दौरान स्पष्टतः औपचारिक बन गया, जब इस्राएल का राष्ट्र प्रतिज्ञा की भूमि पर बस गया था और एक राजा के शासन के अधीन रहने लगा था।

राजतंत्र। राजतंत्र की अवधि इस्राएल के पहले राजा शाऊल के साथ आरंभ होती है। परंतु यह शाऊल के उत्तराधिकारी दाऊद और उसके वंशजों के साथ बहुत निकटता से संबंधित है।

राजतंत्र की अवधि के दौरान भविष्यद्वक्ता का कार्यभार शक्ति या अधिकार के पहलुओं पर बहुत अधिक केंद्रित हो गया, विशेषकर राजा के न्यायालय और यरूशलेम नगर पर, और इस प्रकार भविष्यद्वक्ताओं की संख्या बढ़ती चली गई। परमेश्वर के वासल लोगों के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में राजा को रखते हुए लोगों को परमेश्वर की वाचा की शर्तों को याद दिलाने का भविष्यद्वक्ताओं का कार्य राजा के साथ सीधे संपर्क के द्वारा पूरा किया जाता था।

इस समय के दौरान भविष्यद्वक्ताओं की प्राथमिक भूमिका राजाओं और उनके मंत्रियों को परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के साथ सेवा करने के राष्ट्र के कर्तव्य की याद दिलाना थी। उहारणउदाहरण के लिए

1 और 2 राजाओं और 2 इतिहास की पुस्तकों में इस्राएल और यहूदा के राजाओं और भविष्यद्वक्ताओं के बीच वार्तालापों के कई विवरण पाए जाते हैं। भविष्यद्वक्ताओं ने सामान्य रीति से भी लोगों से बात करना जारी रखा और इसके साथ-साथ वे लोगों को प्रभु की वाचाई माँगों और उनके व्यवहार के परिणामों को भी स्मरण कराते रहे। भविष्यद्वक्ताओं ने पड़ोसी राष्ट्रों को भी आज्ञा दी कि वे इस्राएल और यहूदा के साथ शांति से रहें।

> वह कारण जिसमें बाइबल इस्राएल और यहूदा को दो भिन्न राज्यों के रूप में दर्शाती है . . . निःसंदेह , वे आरंभ में एक ही राज्य थे, परंतु फिर सुलैमान के पुत्र रहूबियाम के शासन में राज्य विभाजित हो गया - यह लगभग 920 ई. पू. या इसी के आसपास हुआ था - और उत्तरी राज्य के पास दस गोत्र थे; और दक्षिणी राज्य के पास दो गोत्र थे। उत्तरी राज्य को इस्राएल कहा जाता था। सबसे बडा गोत्र एप्रेम का था, परंतु उन दसों गोत्रों को मिलकर इस्राएल कहा गया। और दक्षिण राज्य को यहूदा कहा जाता था, जो वहाँ का सबसे बड़ा गोत्र था, और दक्षिण राज्य की राजधानी यरूशलेम थी।
>
> — डॉ. फ्रैंक बार्कर

> सुलैमान के युग के बाद, उत्तरी राज्य और दक्षिण राज्य में विभाजन हो गया। उत्तरी राज्य को इस्राएल कहा जाता था, और उनके पास आराधना के लिए अपना मुख्य स्थान भी था। और फिर दक्षिण राज्य को यहूदा कहा जाता था। और राज्यों में विभाजन के बाद आप अक्सर भविष्यद्वक्ताओं को देखते हैं जो विभिन्न स्थानों पर जाते थे, जैसा कि होशे इस्राएल के लिए नियुक्त भविष्यद्वक्ता था, और यशायाह जो यहूदा के लिए नियुक्त भविष्यद्वक्ता था। और इस प्रकार सेवकाई के अपने अपने क्षेत्र हैं जो इन उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों से संबंधित हैं।
>
> — डॉ. मार्क गिगनिलियट

दुखद रूप से, इस्राएल और यूहदा के लोगों और राजाओं ने इन भविष्यद्वक्ताओं की आज्ञा का पालन नहीं किया। और फलस्वरूप, वे अंततः प्रतिज्ञा की भूमि से निर्वासन में जाने के वाचाई श्राप के अधीन आ गए।

निर्वासन। उत्तरी राज्य अर्थात् इस्राएल को 723 या 722 ई. पू. में निर्वासित किया गया और अश्शूरियों की बंधुआई में ले जाया गया। दक्षिणी राज्य अर्थात् यहूदा 587 या 586 ई. पू. में निर्वासित किया गया और बाबुल अर्थात् बेबीलोन की बंधुआई में ले जाया गया।

भविष्यद्वक्ता का कार्य निर्वासन के दौरान भी परमेश्वर के लोगों के राजाओं की ओर ही उन्मुख रहा। परंतु इतिहास के इस चरण में वहाँ कोई राजा नहीं था, इसलिए परमेश्वर के लोगों के राजा और उनके राज्य की पुनर्स्थापना पर बल दिया गया।

इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर के लोगों को अपने पाप से पश्चाताप करने और वाचा की विश्वासयोग्यता की ओर लौटने को उत्साहित किया, ताकि परमेश्वर उन्हें अपनी वाचाई आशीषें प्रदान कर सके। भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी घोषणा की कि यदि लोग परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं, तो वह उन्हें उसकी वाचा का पालन करने की सामर्थ्य देगा ताकि वे फिर से उसकी वाचा के श्रापों के अधीन न आ जाएँ। जैसा कि हम यिर्मयाह 31:33-34 में पढ़ते हैं, प्रभु कुछ ऐसा करेगा कि वह उनके द्वारा वाचा को फिर से तोड़ना असंभव बना देगा, ताकि वे उत्साह के साथ उसकी व्यवस्था के द्वारा

अपना जीवन जीएँ। इस सेवकाई के द्वारा भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर को इस बात के प्रति मनाने की आशा की कि वह दाऊद के एक धर्मी वंश के राजत्व के अधीन प्रतिज्ञा की भूमि में उनके राज्य को स्थापित करे।

अंततः पुनर्स्थापना की अवधि के दौरान निर्वासन की अवधि आंशिक तौर पर समाप्त हुई।

पुनर्स्थापना। निर्वासन के बाद का या पुनर्स्थापना का युग लगभग 539 या 538 ई. पू. में आरंभ हुआ। उस समय में इस्राएल या यहूदा में कोई राजा नहीं था, परंतु यरूशलेम और मंदिर का निर्माण अंततः फिर से हो गया था, और बहुत से परिवार प्रतिज्ञा की भूमि में फिर से लौट आए थे।

अभी भी कुछ भविष्यद्वक्ता वहाँ थे। परंतु कुछ विश्वासयोग्य भविष्यद्वक्ताओं जैसे हाग्गै और जकर्याह ने लगातार अगुओं और सामान्य लोगों पर अपना ध्यान लगाए रखा ताकि वे उन्हें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित करें। उन्होंने राष्ट्र को उत्साहित किया कि वे पुनर्स्थापना के प्रयास के दौरान परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें ताकि परमेश्वर इस कार्य को पूर्णता तक ले जाए। दुखद रूप से, लोगों ने भविष्यद्ववाणीय चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया, और इसके फलस्वरूप पुनर्स्थापना के प्रयास असफल हो गए।

पुनर्स्थापना के समय के दौरान राज्य के लिए अपेक्षाएँ यह थीं कि परमेश्वर दाऊद के एक वंशज को इस्राएल और यहूदा के सिंहासन पर लौटाने के द्वारा दाऊद से की गई उसकी प्रतिज्ञाओं को अंततः पूरा करेगा। हम इस आशा को जकर्याह 12-13 जैसे स्थानों में अभिव्यक्त होता देखते हैं। आरंभ में, आशा यह थी कि लोगों की आज्ञाकारिता परमेश्वर को प्रेरित करेगी कि वह उन्हें आशीषित करे। परंतु जब पुनर्स्थापना का कार्य असफल हो गया, तो आशा यह हो गई कि परमेश्वर अंततः उनके पापों के बावजूद अपने लोगों पर तरस खाएगा, और अपने नाम की खातिर राज्य की स्थापना करेगा।

भविष्यद्वक्ता के कार्य के ऐतिहासिक विकास की जाँच करने के द्वारा, हम देख सकते हैं कि भविष्यद्वक्ता हमेशा परमेश्वर के अधिकारिक राजदूत थे, जिन्हें परमेश्वर के लोगों को वाचा के प्रति उत्तरदाई ठहराने का कार्य दिया गया था। और इस निरंतरता ने भविष्य की भविष्यद्वाणीय सेवाओं के लिए एक विशेष अपेक्षा को उत्पन्न कर दिया था। विशेष रूप से कहें तो, इसने यह दर्शाया कि परमेश्वर के सारे भावी भविष्यद्वक्ता भी उसके अधिकारिक संदेशवाहक होंगे, जिनका कार्य उसके लोगों को उनके प्रति उसकी भलाई के बारे में, जिस विश्वासयोग्यता की वह मांग करता है उसके बारे में, और आशीषों और श्रापों के परिणामों के बारे में स्मरण दिलाना होगा।

परंतु समय के साथ-साथ भविष्यद्वक्ता के कार्यभार में हुए बदलाव के रूपों के द्वारा अपेक्षाएँ उत्पन्न कर दी गई थीं। आरंभ में, परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता राजा के कार्यभार के साथ निकटता से जुड़े हुए नहीं थे। परंतु जब इस्राएल को एक राजा मिल गया, तो हम देखते हैं कि भविष्यद्वक्ताओं की भूमिका राजकीय कार्यभार से गहराई से जुड़ गई, और हर बार जब भी महत्वपूर्ण बदलावों ने राजा के कार्यभार को प्रभावित किया, तो भविष्यद्वक्ता के कार्यभार पर भी इसके प्रभाव पड़े।

अतः यह इस बात को दर्शाता है कि नए नियम की अवधि में भविष्यद्वक्ता के कार्य की अपेक्षाएँ मूलभूत रूप से पुराने नियम के इतिहास के अंतिम चरण से विचारों को प्राप्त करना ही थीं, जैसे कि निर्वासन के बाद की पुनर्स्थापना जब परमेश्वर के लोग प्रतीक्षा ही कर रहे थे कि दाऊद के वंश का कोई राजा सिहांसन पर लौटेगा। विशेष रूप से, अपेक्षा यह थी कि भविष्य के भविष्यद्वक्ता मसीहारुपी राजा की घोषणा करेंगे और उसके साथ आएँगे, और परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासयोग्यता के एक नए युग का सूत्रपात करेंगे।

भविष्यद्वक्ता के कार्य के ऐतिहासिक विकास पर आधारित भावी भविष्यद्वक्ताओं के लिए पुराने नियम की अपेक्षाओं के साथ-साथ भावी भविष्यद्वक्ताओं के विषय में विशेष भविष्यद्वाणियों द्वारा उत्पन्न की गई अपेक्षाएँ भी थीं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विशेष भविष्यद्वाणियाँ

पुराने नियम में भविष्य के भविष्यद्वक्ताओं के संबंध में इतनी अधिक भविष्यद्वाणियाँ हैं कि हम उन सबका वर्णन नहीं कर सकते। इसलिए इस अध्याय के हमारे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हम अपनी चर्चा को केवल तीन तक ही सीमित रखेंगे। पहली जिसका उल्लेख हम यहाँ करेंगे वह ऐसी आशा है कि परमेश्वर अंततः निर्वासन की भविष्यद्वाणी को पूरा करेगा कि एक विशेष भविष्यद्वक्ता स्वयं प्रभु का एक संदेशवाहक होगा।

यशायाह 40:3-5 के अनुसार एक विशेष भविष्यद्वक्ता यह घोषणा करेगा कि प्रभु अपने सारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने और दाऊद के राजतंत्र को पुनर्स्थापित करने के लिए आ रहा है। और एक बार जब यह संदेशवाहक प्रकट हो जाता है, तो पुनर्स्थापना का कार्य तब निकट ही होगा।

दूसरा, लोग अभी भी मूसा जैसे अंतिम भविष्यद्वक्ता की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो लोगों की धार्मिकता में अगुआई करने के लिए उठ खड़ा होगा, ठीक वैसे ही जैसे मूसा ने राजतंत्र से पूर्व की अवधि में की थी। व्यवस्थाविवरण 18:18 में मूसा को कहे गए प्रभु के वचनों को स्मरण करें।

> सो मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूँगा और अपना वचन उसके मुँह में डालूँगा और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूँगा वही वह उनको कह सुनाएगा। (व्यवस्थाविवरण 18:18)

> पुराने नियम में, हमारे पास प्रभु यीशु मसीह के कार्य के आधार पर, उसके भविष्यद्वक्ता, याजक, और राजा होने के आधार पर आगमन के पूर्वानुमान हैं। व्यवस्थाविवरण 18 एक बहुत ही महत्वपूर्ण अनुच्छेद है जो भविष्य के एक ऐसे भविष्यद्वक्ता के बारे में कहता है जो कि मूसा के समान होगा। पुराने नियम के संदर्भ में मूसा के समान होने का अर्थ था मूसा जैसा होना, जिसने परमेश्वर को आमने-सामने देखा, जिसने अद्वितीय रूप से परमेश्वर के प्रकाशन को प्राप्त किया। वास्तव में, मूसा सभी भविष्यद्वक्ताओं से अधिक ऊँचाई पर खड़ा दिखाई देता है। जब आप पुराने नियम का अध्ययन करते हैं, विशेष करके व्यवस्थाविवरण 34 के अंत में, तो वहाँ पर एक घोषणा दिखाई देती है कि मूसा जैसा कोई भविष्यद्वक्ता अभी तक उत्पन्न नहीं हुआ है। और यह बात उस कार्य को व्यवस्थित करती है कि जो आने वाला है, वह मूसा के समान होगा, परंतु फिर भी उससे महान होगा, जो कि परमेश्वर के वचन को बोलेगा, जो हमें परमेश्वर की सच्चाई प्रदान करेगा, जो परमेश्वर को आमने सामने जानेगा, और यह सब वास्तव में हमारे प्रभु यीशु मसीह में पूरा हुआ। यूहन्ना 1 इसे ही लेता है, हमारा प्रभु जो पिता को संपूर्ण अनंतता से जानता था, वही उसे हम पर प्रकट करता है। प्रेरितों के काम 3 भी इसे ही लेता है कि यह इसी की परिपूर्णता है, इसलिए कि यीशु ही वही है जो परमेश्वर के राज्य को लाता है; वह परमेश्वर के प्रकाशन को पूरा करता है। वही वह है जो मूसा की भूमिका को पूरा तो करता है परंतु एक महान रूप में। और इब्रानियों 1 विशेष करके इस पर बल देता है कि परमेश्वर का भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बोलना, जिसमें मूसा भी सम्मिलित है, अब उसके उस पुत्र यीशु मसीह में पूरा हो गया है, जो उस प्रकाशन को पूरा करता है।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

किसी न किसी स्तर पर, परमेश्वर के लोगों ने सदैव अपने प्रभु से अपेक्षा की है कि वह मूसा के समान इस भविष्यद्वक्ता को भेजे। दुखद रूप से, पुराने नियम का कोई भी भविष्यद्वक्ता उसी तरह के सामर्थी आत्मिक वरदानों को प्रदर्शित नहीं कर पाया जैसे मूसा के पास थे, और न ही परमेश्वर की वाचा की संपूर्ण आशीषों को ला सका। परंतु पुनर्स्थापना के दिनों में एक नवीनीकृत या नई आशा थी कि राज्य की पुनर्स्थापना करने के लिए परमेश्वर अंततः इस भविष्यद्वक्ता को भेजने वाला था।

तीसरा, वहाँ पर ऐसी अपेक्षा थी कि भविष्य में जब राज्य पूरी तरह से पुनर्स्थापित हो जाएगा, तो भविष्यद्वाणी की भी पुनर्स्थापना होगी। झूठे भविष्यद्वक्ताओं को देश से निकाल दिया जाएगा, और सच्चे भविष्यद्वक्ताओं की संख्या बढ़ जाएगी।

जैसे कि पुनर्स्थापना के भविष्यद्वक्ता जकर्याह ने अपनी पुस्तक के 13:2 में लिखा है :

> **"उस समय, मैं इस देश में से मूरतों के नाम मिटा डालूँगा और वे फिर स्मरण में न रहेंगी" सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, "और मैं भविष्यद्वक्ताओं और अशुद्ध आत्मा को इस देश से में से निकाल दूँगा"। (जकर्याह13:2)**

इससे बढ़कर, लोग अभी भी योएल द्वारा की गई भविष्यद्वाणी की पूर्णता की अपेक्षा कर रहे थे जिसमें परमेश्वर के सच्चे भविष्यद्वक्ताओं की संख्या में वृद्धि होगी जो परमेश्वर की संपूर्ण वाचाई आशीषों को लेकर आएगा। सुनिए योएल 2:28-30 में योएल ने क्या भविष्द्वाणी की है :

> **उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा, तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा (योएल 2:28-30)।**

भविष्य के ये दिन, जिनका उल्लेख योएल ने भी इन शब्दों "उन बातों के बाद" के साथ किया है, अंत के समय, अर्थात् अंतिम दिन थे, जब परमेश्वर पूरी तरह से अपने राज्य को पूरी पृथ्वी के ऊपर स्थापित कर देगा और अपने लोगों पर अंतिम आशीषें उंडेलेगा। यह अपेक्षा की गई थी कि उस समय परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के बीच भविष्यद्वाणी आम बात होगी, क्योंकि उन सबने परमेश्वर की वाचा को महत्व दिया और उसकी आराधना करने के लिए एक दूसरे को प्रोत्साहित किया।

पुराना नियम ऐसे समय में समाप्त होता है जब इस्राएल एक बहुत ही अव्यवस्थित अवस्था में था और राज्य की सफलता की कोई तात्कालिक आशा दिखाई नहीं दे रही थी। परंतु फिर भी, इस्राएल के विश्वासयोग्य लोगों ने परमेश्वर में अपने इस भरोसे को बनाए रखा कि वह अंततः अपने राज्य के लिए की गईं पुराने नियम की सारी अपेक्षाओं को पूरा करेगा, और यह कि वह इसे आंशिक रूप से भविष्यद्वक्ता के कार्य के द्वारा पूरा करेगा। और जैसा कि हम देखेंगे, यीशु की सेवकाई में बिल्कुल ऐसा ही हुआ।

परमेश्वर द्वारा अपने भविष्यद्वक्ताओं को दी गई जिम्मेदारियों और सेवकाई की पुराने नियम की पृष्ठभूमि की जाँच कर लेने के बाद, अब हम हमारे अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : यीशु के व्यक्तित्व में भविष्द्ववाणीय कार्य की पूर्णता।

यीशु में पूर्णता

नया नियम स्पष्ट करता है कि यीशु ही परमेश्वर का परम भविष्यद्वक्ता है। वह परमेश्वर की अधिकारिक वाचा के राजदूत के रूप में सेवा करने के लिए पूरी तरह से योग्य है। वह इस कार्यभार के

कार्यों को सिद्धता के साथ पूरा करता है। और उसमें पुराने नियम की सारी भविष्यद्वाणीय अपेक्षाएँ पूरी हो जाती हैं।

यीशु के द्वारा भविष्यद्वाणीय कार्य की परिपूर्णता के बारे में हमारी चर्चा उन्हीं श्रेणियों पर केंद्रित होगी जिनका प्रयोग हमने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और उनके कार्य का वर्णन करते हुए किया था, विशेषकर : इस कार्यभार के लिए योग्यताएँ, कार्यप्रणाली और अपेक्षाएँ। आइए हम सबसे पहले इस बात को देखें कि यीशु ने एक भविष्यद्वक्ता की योग्यताओं को कैसे पूरा किया।

योग्यताएँ

जैसे कि हमने पहले देखा था, इस्राएल के सच्चे भविष्यद्वक्ताओं को चार योग्यताओं को पूरा करना होता था : उन्हें परमेश्वर की ओर से बुलाया जाना आवश्यक था। उन्हें लोगों से बात करने के लिए परमेश्वर का वचन दिया जाता था। उनसे मांग की जाती थी कि केवल वे उसी बात को बोलने के द्वारा जिसकी आज्ञा परमेश्वर दी है, परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहें। और उनके संदेशों को पूर्णता के द्वारा प्रमाणित होना आवश्यक था। और जैसा कि हम देखेंगे, यीशु ने इन चारों योग्यताओं को पूरा किया। सबसे पहले, यीशु परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया था।

परमेश्वर द्वारा बुलाया गया

यीशु को विशेष रीति से भविष्यद्वक्ता होने के लिए परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया था। हम उसके जन्म, बपतिस्मा, और रूपांतरण से जुडी घटनाओं में इसे स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

आरंभ करने के लिए, लूका 2:30-35 में यीशु के जन्म के बारे में भविष्यद्वक्ता शमौन के शब्दों को सुनें :

> मेरी आँखो ने तेरे उद्धार को देख लिया है, जिसे तूने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है कि वह अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिए ज्योति, और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो . . . यह बालक एक चिन्ह ठहराया गया है, जिस के विरोध में बातें की जाएगी, इससे बहुतों के हृदयों के विचार प्रगट होंगे। (लूका 2:30-35)

शमौन ने यह प्रकट किया कि यीशु के जन्म से ही उसे, अर्थात् हमारे प्रभु को भविष्यद्वाणीय प्रकाशन और अपने लोगों के लिए चिह्न बनने के लिए बुलाया गया था।

इससे बढ़कर, यीशु के बपतिस्मा के समय पिता परमेश्वर और पवित्र आत्मा ने यह दर्शाया कि यीशु को भविष्यद्वक्ता के रूप में बुलाया गया था। मत्ती 3-4, मरकुस 1 और लूका 3-4 में परमेश्वर पिता ने सुननेयोग्य आवाज में बोला और पवित्र आत्मा एक कबूतर के समान उसके ऊपर यह प्रकट करने के लिए उतरा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था जिसे एक विशेष सेवकाई के लिए नियुक्त किया गया था। इन सारे अध्यायों में यीशु का बपतिस्मा उसे पश्चाताप और परमेश्वर के राज्य के आगमन के भविष्यद्वाणीय संदेश की घोषणा करने की उसकी सार्वजनिक सेवकाई के लिए अलग करता है।

परंतु शायद वह कार्य जिसने एक भविष्यद्वक्ता के रूप में यीशु को स्पष्ट रूप से पहचाना, उसका रूपांतरण था, जिसका वर्णन मत्ती 17:2-3 में इस तरह से किया गया है :

> [यीशु का] मुँह सूर्य की नाई चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाई उजला हो गया . . . मूसा और एल्लियाह [उसके साथ] बातें करते हुए. . . दिखाई दिए। (मत्ती 17:2-3)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यीशु पुराने नियम के सबसे महान भविष्यद्वक्ताओं के साथ प्रकट हुआ : मूसा, जो व्यवस्था का देने वाला और उनकी कसौटी था जो उसके लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाएँगे; और एलिय्याह, वह आश्चर्यकर्म करने वाला था जिसके प्रचार ने दाऊद के अविश्वासी घराने को पश्चाताप की बुलाहट दी। इन दो लोगों के साथ उसकी उपस्थिति मात्र से ही, यीशु को महान भविष्यद्वक्ता के रूप में दिखाया गया।

परंतु ध्यान दें कि मत्ती 17:4-5 में आगे क्या होता है :

> पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, हमारा यहाँ पर रहना अच्छा है, यदि तेरी इच्छा हो तो यहाँ तीन मण्डप बनाऊँ।" वह बोल ही रहा था कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया और देखो, उस बादल में से यह शब्द निकला, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ, इसकी सुनो!" (मत्ती 17:4-5)

परमेश्वर ने पतरस और अन्य चेलों को आज्ञा दी कि वे तीनों भविष्यद्वक्ताओं की नहीं, बल्कि केवल यीशु की ही सुनें। उन्हें मूसा और एलिय्याह से अधिक उसकी सुननी थी। इस प्रकार, स्वयं परमेश्वर ने दर्शाया कि यीशु ही हर समय का सबसे श्रेष्ठ भविष्यद्वक्ता था।

> रूपांतरण की कहानी में रोचक बात यह है कि परमेश्वर चेलों को आज्ञा देता है कि वे यीशु की सुने। मैं सोचता हूँ कि यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि उसने उन्हें मूसा और एलिय्याह को त्यागने का निर्देश नहीं दिया, परंतु यह निर्देश दिया कि वे यीशु को प्राथमिकता दें। मैं सोचता हूँ कि सारी बात का निचोड़ इस बात को स्थापित करना था कि यीशु मसीह, परमेश्वर के प्रकाशन की पराकाष्ठा है। यहूदियों की परंपरा मूसा को व्यवस्था की अभिव्यक्ति के रूप में, और एल्लियाह को सबसे प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता के रूप में पहचानना और सम्मान देना थी। ऐसा नहीं है कि व्यवस्था बेकार हो गई है या भविष्यद्वक्ता बेकार हो गए हैं। निश्चित रूप से, हम हमारे पुराने नियम को त्यागना नहीं चाहते। परंतु यीशु मसीह में प्रकाशन की सर्वोत्कृष्ट और सर्वोच्च और सबसे उत्तम प्रकृति है जिस पर यहाँ बल दिया गया है। यह तो बल्कि इब्रानियों के पहले अध्याय की तरह है जहाँ पर परमेश्वर ने हमसे विभिन्न समयों में कई तरीकों से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बात की है, परंतु अब, अब हम सबसे सिद्ध और पूर्ण प्रकाशन तक आ पहुँचे हैं। यह ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने कोई संदेशवाहक भेजा हो, बल्कि यहाँ तो स्वयं परमेश्वर हमारे बीच में आ गया है। मैं सोचता हूँ कि रूपांतरण की आज्ञा का अंतर्निहित पहलू यही है।
>
> — डॉ. ग्लीन स्कोर्गी

दूसरी योग्यता के लिए, यीशु ने विशेष तौर पर कहा है कि उसे बोलने के लिए परमेश्वर का वचन दिया गया है।

परमेश्वर के वचन का दिया जाना

उदाहरण के लिए, यूहन्ना 14:24 में लिखित यीशु के वचनों को देखें :

> जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 14:24)

यीशु ने यूहन्ना 12:49 और 14:10 जैसे स्थानों में भी ऐसे ही कथनों को कहा है। वास्तव में, यूहन्ना अध्याय 1 यीशु को परमेश्वर के वचन के रूप में दर्शया गया है।

> शब्द "वचन" का प्रयोग यूहन्ना 1 में किया गया है, यूनानी शब्द "*लोगोस*" की चर्चा वर्षो से बहुत से धर्मविज्ञानियों द्वारा की गई है, और यह निश्चित रूप से सत्य हो सकता है कि तर्क के रूप में परमेश्वर या बुद्धि के रूप में परमेश्वर के विचार की कोई यूनानी समझ हो सकती है, परंतु स्पष्ट रूप से पुराने नियम में यहोवा के वचन, परमेश्वर के वचन का विचार बहुत प्रबलता से दिखाई देने वाला विषय है, और हो सकता है कि यूहन्ना उन भ्रांतियों को लेता है जिनका यूनानी दर्शनशास्त्र में उपयोग होता था, और वास्तव में उसे परमेश्वर के वचन के रूप में, परमेश्वर को प्रकट करने वाले यीशु पर लागू करता है, उस परमेश्वर को जिसने कहा था, "ज्योति हो जा" और उसने कहा और वैसा हो गया, और हो सकता है कि यूहन्ना बस यही कह रहा है कि जब वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में वास किया, तो वह पूरे अधिकार और बातचीत करने की सामर्थ्य के साथ आया जिसका प्रयोग परमेश्वर मे संपूर्ण पुराने नियम में भी किया है।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

> सबसे पहले, हम परमेश्वर के वचन को एक व्यक्ति,अर्थात् प्रभु यीशु मसीह के रूप में देख सकते हैं, और दूसरा हम उसे परमेश्वर की वाणी में देख सकते हैं। परंतु यूहन्ना उसे "परमेश्वर का वचन" कहता है। और उस संबंध में वह प्राथमिक तौर पर जो करता है, वह यह है कि वह पिता के साथ हमारी पहचान करवाने में प्रभु की भूमिका को बताता है। और इब्रानी लेखक ऐसा कहेंगे कि किसी ने कभी भी परमेश्वर को नहीं देखा है, परंतु यीशु मसीह जो कि उसकी गोद में था, स्पष्टतः उसमें से निकला और उसने हमारी पहचान उससे करा दी।
>
> — डॉ. लैरी कोकरैल

> यूहन्ना, यदि वह सुसमाचार प्रचार का कोई कार्य कर रहा है, तो यह वही है कि वह उस बात की ओर ले जा रहा है वह परमेश्वर है, जिसके साथ आपको तालमेल बैठाना है। और इस प्रकार हम यूहन्ना 20:28 तक पहुँचते हैं, जहाँ यूहन्ना हमसे चाहता है कि हम यीशु को परमेश्वर के रूप में देखें, जो हमें परमेश्वर का वचन बता रहा है। हम उस पर भरोसा रख सकते हैं क्योंकि वह परमेश्वर का वचन है।
>
> — डॉ. जॉन मैकिनले

तीसरा, यीशु ने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने की भविष्यद्वाणीय योग्यता को पूरा किया।

परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना

अपनी पूरी सेवकाई के दौरान यीशु इसी बात पर बल देता रहा कि वह पिता की इच्छा को पूरा कर रहा है। उसने केवल उन्हीं बातों को कहा और उन्हीं कार्यों को किया जिनकी आज्ञा पिता ने दी थी। हम इसे कई स्थानों में देखते हैं, जैसा कि यूहन्ना 5:19, 30 और 8:28 में।

यीशु ने यह भी बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि उसके सारे वचन और कार्य उन सभी भविष्यद्वक्ताओं के साथ मेल खाते हैं जो उससे पहले आए थे। उदाहरण के लिए, उसने मत्ती 11:9-14 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई को प्रमाणित करते हुए बात की। उसने मत्ती 12:38-45 में भविष्यद्वक्ता योना की पुष्टि की। उसने यशायाह 61 को पूरा करने और एक अभिषिक्त भविष्यद्वक्ता के प्रतिज्ञात आगमन की घोषणा करते हुए लूका 4 में अपनी सेवकाई का उदघाटन किया। वास्तव में, यीशु ने लगातार और निरंतर रूप से संपूर्ण पुराने नियम की सच्चाई और उसके बने रहने की वैधता की पुष्टि की।

जैसा कि उसने मत्ती 5:17 में कहा है :

> **यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वकताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं परंतु पूरा करने आया हूँ। (मत्ती 5:17)**

इन और अन्य रूपों में, यीशु ने यह दिखाया कि जो कुछ भी उसने कहा और जो कुछ भी उसने किया वह परमेश्वर के प्रति पूरी विश्वसायोग्यता का प्रदर्शन था।

अंततः, यीशु ने अपने भविष्यद्वाणीय संदेशों को उनकी पूर्णता के साथ प्रमाणित करने की योग्यता को भी पूरा किया।

पूर्णता के द्वारा प्रमाणित होना

सुसमाचार अक्सर इस बात की ओर संकेत करने द्वारा एक प्रमाणिक भविष्यद्वक्ता के रूप में यीशु के पद को प्रमाणित करते हैं कि उसकी सारी भविष्यद्वाणियाँ पूरी हुई थीं। कभी-कभी उसके वचन तुरंत पूरे हुए, जैसे कि तब जब उसने सफलतापूर्वक प्रकृति को नियंत्रित किया, दुष्टात्माओं को निकाला, बीमारों को चंगा किया, मृतकों को जीवित किया। इन विषयों में मौसम, दुष्टात्माओं, बीमारियों, और यहाँ तक कि मृत्यु ने तुरंत उसकी आधिकारिक, भविष्यद्वाणीय आज्ञाओं का पालन किया। अन्य समयों में, उसकी भविष्यद्वाणी कुछ समय के बाद में पूरी हुई, जैसे कि जब उसने भविष्य के बारे में भविष्यद्वाणी की।

उदाहरण के लिए, यूहन्ना 18:9 में यूहन्ना ने यह टिप्पणी की :

> **यह इसलिए हुआ कि वह वचन पूरा हो जो उसने कहा था, " जिन्हें तूने मुझे दिया, उन में से मैंने एक को भी न खोया"। (यूहन्ना 18:9)**

यहाँ यूहन्ना ने कुछ वह दर्शाया है जो यीशु ने यूहन्ना 17:12 में अपनी महायाजकीय प्रार्थना में कहा था, और उसने दर्शाया कि यीशु के वचन पूरे हो गए थे।

और निःसंदेह, जो वचन यीशु ने अपनी शीघ्र आने वाली मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में कहे, वे भी पूरे हो गए थे, जैसा कि हम मत्ती 16:21 और 20:18-19, और यूहन्ना 18:32 जैसे स्थानों में देखते हैं। इस प्रकार की पूर्णताओं के द्वारा यीशु को परमेश्वर का सच्चा भविष्यद्वक्ता दिखाया गया था।

परंतु यीशु की सारी भविष्यद्वाणियाँ उसके जीवनकाल में ही पूरी नहीं हुई थी। उनमें से कईयों का संबंध भविष्य के साथ था, और अक्सर बहुत दूर के भविष्य के साथ। कुछ विषयों में, इन भविष्यद्वाणियों की पूर्णता का वर्णन इतिहास में अन्य स्थानों पर किया गया है।

उदाहरण के लिए, लूका 21:5-6 में यीशु द्वारा की गई भविष्यद्ववाणी को सुनिए :

> **जब कुछ लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे कि वह कैसे सुन्दर पत्थरों और भेंट की वस्तुओं से सँवारा गया है, तो उसने कहा, "वे दिन आएँगे, जिनमें यह सब जो तुम देखते हो, उनमें से यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जाएगा।" (लूका 21:5-6)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यीशु ने कहा कि यहूदी मंदिर का नाश कर दिया जाएगा क्योंकि यहूदियों ने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया है। परंतु मंदिर उस समय में भी खड़ा था जब यीशु की मृत्यु हुई। यद्यपि कुछ ही समय के बाद उसे नाश कर दिया गया था, जब रोमियों ने यरूशलेम को 70 ईस्वी में नाश किया था।

स्पष्ट है कि यीशु की सारी भविष्यद्वाणियाँ पूरी नहीं हुई। उदाहरण के लिए, वह अभी तक अपने राज्य के समापन के लिए वापस नहीं आया है। परंतु वह आएगा। वास्तव में, हमें पूरी तरह से आश्वस्त होना चाहिए और हम हो सकते हैं कि यीशु अंततः अपनी सारी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा। क्योंकि प्रत्येक विषय में जहाँ कहीं हम उसकी भविष्यद्वाणियों को पवित्रशास्त्र और बाकी के इतिहास के साथ तुलना करके जाँचते हैं, तो उसके वचन सदैव अपनी पूर्णता के द्वारा प्रमाणित होते रहे हैं। और क्योंकि उसके शब्द अतीत में हमेशा सत्य ठहरे हैं, इसलिए हमें अपेक्षा करनी चाहिए कि वे भविष्य में भी सत्य ठहरेंगे।

> मैं सोचता हूँ कि जो भरोसा हमारे पास है उसके साथ यदि हम पुराने नियम के इतिहास में वापस जाएँ तो हम देख सकते हैं कि कैसे परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह के पहले आगमन में अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा किया है। कदम दर कदम, उत्पत्ति 3:15 की उसकी आरंभिक प्रतिज्ञा से लेकर उस भविष्यद्वाणीय प्रकाशन तक जो हमारे पास है, परमेश्वर अपने पुत्र, अर्थात् मसीहा के आने का पूर्वानुमान लगा रहा है। यह सब कुछ पूरा हो गया। यह सब कुछ अब से लगभग 2,000 वर्ष पहले पूरा हो गया। और जब यीशु अपने आगमन और अपने पूरे किए गए कार्य के प्रकाश में यह कहता है कि वह फिर से वापस आएगा, कि ऐसा होगा, तो अतीत में परमेश्वर की पूरी हुई प्रतिज्ञाओं के प्रकाश में हम इस बात के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं कि वह भविष्य में ऐसा ही करना जारी रखेगा।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

यह देखने के बाद कि यीशु ने भविष्यद्वाणीय कार्य की योग्यताओं को पूरा कर दिया है, हम अब उसके कार्यभार की कार्यप्रणाली की पूर्णता को देखने के लिए तैयार हैं।

कार्यप्रणाली

जैसा कि हमने इस पूरे अध्याय में कहा है, भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की वाचा के राजदूत थे। उन्होंने उसके लोगों के समक्ष उसकी इच्छा को स्पष्ट किया, जिसमें उन्होंने उनको उनके विद्रोह से पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित किया, और विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर की सेवा करने के लिए उन्हें उत्साहित किया। विशेषकर, हमने उनकी कार्यप्रणाली के तीन पहलुओं को देखा : उनका अधिकार, उनका कार्य और उनकी विधियाँ।

हमारे अध्याय के इस बिंदु पर, हम उन रूपों में एक भविष्यद्वक्ता के तौर पर यीशु की कार्यप्रणाली का वर्णन करेंगे जो पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की कार्यप्रणाली के सामानांतर हो। पहला, हम यह देखेंगे कि यीशु के पास भी परमेश्वर की ओर से बोलने का अधिकार था। दूसरा, हम देखेंगे कि उसका कार्य पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के समान था। और तीसरा, हम देखेंगे कि उसकी विधियाँ उनकी विधियों के समान ही थीं। आइए सबसे पहले हम परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने के यीशु के अधिकार को देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अधिकार

नया नियम इस बात को पूर्णतः स्पष्ट करता है कि यीशु के पास अपने पिता की ओर से बोलने का अधिकार था। हम इसे यूहन्ना 7:16-19, 12:49-50, और 14:24 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं। इन अनुच्छेदों में यीशु ने उस अधिकार के साथ बोला जो पिता परमेश्वर की ओर से उसे दिया गया था।

जैसे यीशु ने यूहन्ना 7:16-19 में यरूशलेम में भीड़ से कहा :

> मेरा उपदेश मेरा नहीं, परंतु मेरे भेजने वाले का है . . . जो अपनी ओर से कुछ कहता है वह अपनी ही बढ़ाई करता है, परंतु जो अपने भेजने वाले की बढ़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उस में अधर्म नहीं। (यूहन्ना 7:16-19)

पिता की ओर से यीशु को मिला अधिकार उसकी इस शिक्षा में भी स्पष्ट दिखाई देता है कि जिस किसी ने उसे स्वीकार किया उसने पिता को भी स्वीकार किया, और जिस किसी ने उसे अस्वीकार किया उसने पिता को भी अस्वीकार कर दिया। इस बात को बहुत से अनुच्छेदों में स्पष्ट किया गया है, जैसे कि मत्ती 10:40, मरकुस 9:37, लूका 9:48 और यूहन्ना 13:20, और 12:44। केवल एक उदाहरण के रूप में, लूका 10:16 में यीशु के वचनों को सुनिए :

> जो कोई मेरा इनकार करता है वह उसका इनकार करता है जिसने मुझे भेजा है। (लूका 10:16)

जो लोग परमेश्वर के आधिकारिक संदेशवाहक के व्यक्तित्व और संदेश से विमुख होकर दूर चले जाते हैं, वे अंततः संदेश की प्रमाणिकता को पहचान लेंगे। परंतु दुखद रूप से, उस समय तक शायद वे प्रत्युत्तर देने के अपने अवसर को खो देंगे।

यूहन्ना 8:26-28 में दिए गए इस विवरण को सुनिए जिसमें यीशु का अपने विरोधियों के साथ सामना हुआ :

> "तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना है और निर्णय करना है परंतु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, और जो मैंने उस से सुना है, वही जगत से कहता हूँ।" वे न समझे कि वह हम से पिता के विषय में कहता है। तब यीशु ने कहा, "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वहीं हूँ, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परंतु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ"। (यूहन्ना 8:26-28)

यीशु के भविष्यद्वाणीय अधिकार की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हम उस कार्य को देखने की स्थिति में हैं जिसे करने के लिए यीशु को भेजा गया था।

कार्य

जैसा कि हमने पहले भी ध्यान दिया था, क्योंकि भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की वाचा के राजदूत थे, इसलिए उन्हें परमेश्वर के लोगों को उसकी वाचा की बातें याद दिलाने और उसकी शर्तों को मानने के लिए उन्हें उत्साहित करने का कार्य दिया गया था। और एक भविष्यद्वक्ता की अपनी भूमिका में यीशु को भी यह कार्य सौंपा गया था। हम इसे विशेषकर उस तरीके में देखते हैं जिसमें यीशु ने इस शुभ संदेश की घोषणा की कि परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण आ रहे थे।

पहला, परमेश्वर के राज्य के विषय पर उसकी सारी शिक्षाओं में उसने परमेश्वर की राजत्व की सच्चाई और अधिकार के बारे में घोषणा की, और इस प्रकार अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा के

अस्तित्व की पुष्टि की। हम इसे मत्ती 6:10 में पाई जाने वाली प्रभु की प्रार्थना सहित कई स्थानों में देखते हैं, जहाँ पर यीशु ने अपने चेलों को परमेश्वर के राज्य के पृथ्वी पर आने, और उसकी इच्छा के पूरे होने की प्रार्थना करना सिखाया।

दूसरा, यीशु ने इस बात की भी पुष्टि की कि वाचा की शर्तें अभी भी कायम हैं, और कि लोग इसका पालन करने में असफल हो गए हैं। यह उसके इन उपदेशों से स्पष्ट है कि लोग अपने पापों से पश्चाताप करें, जैसे कि मत्ती 4:17, और मरकुस 1:15।

और तीसरा, यीशु ने वाचा के परिणामों की पुष्टि की। उदाहरण के लिए, मत्ती 23 के हाय के सात वचनों में यीशु ने परमेश्वर के लोगों को उत्साहित किया कि वे उसके दंड से बचने के लिए परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें। और धन्य वचनों में जो मत्ती 5:3-12 में पहाड़ी उपदेश को आरंभ करते है, उसने परमेश्वर के लोगों को उत्साहित किया कि वे उसकी दया को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें ताकि वे उसकी आशीषों को प्राप्त कर सकें।

सुनिए लूका 4:17-21 में यीशु ने किस प्रकार अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरंभ में अपने कार्य को सारगर्भित किया :

> यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उसने पुस्तक खोल कर, वह जगह निकाली जहाँ पर लिखा था कि, "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।" . . . [तब उसने कहा], "आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है"। (लूका 4:17-21)

यहाँ यीशु ने विशेष रूप से स्वयं को परमेश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना के संदेशवाहक या घोषणा करने वाले के रूप में पहचाना, जिसकी भविष्यद्ववाणी यशायाह 61 में की गई थी।

यशायाह ने सिखाया कि जब परमेश्वर अपने शत्रुओं के विरूद्ध अंतिम दंड को लेकर आएगा और इस्राएल के द्वारा अपने राज्य को पूरे संसार में फैलाएगा, तो वह अपना यह कार्य एक विशेष भविष्यद्वक्ता के द्वारा आरंभ करेगा। यह भविष्यद्वक्ता शुभ संदेश, या सुसमाचार की घोषणा करेगा कि परमेश्वर का राज्य अंततः आ रहा है। और उस घोषणा की प्रक्रिया में भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के वाचाई लोगों को उनकी जिम्मेदारियों का स्मरण दिलाएगा - उन्हें उत्साहित करेगा कि वे वाचाई श्रापों से बचने के लिए अपने पापों से पश्चाताप करें, और परमेश्वर की वाचाई आशीषों को प्राप्त करने के लिए विश्वासयोग्यता में बने रहें। और यीशु की स्वयं की गवाही के अनुसार हमारा प्रभु स्वयं ही वह भविष्यद्वक्ता था।

> सुसमाचार और परमेश्वर के राज्य में क्या संबंध है? मरकुस के सुसमाचार के अध्याय 1 में यीशु के पहले शब्द ये हैं, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" सुसमाचार वह शुभ संदेश है जो यह घोषणा करता है कि परमेश्वर का राज्य इस संसार में आ चुका है। इस प्रकार, यीशु द्वारा किए गए सारे आश्चर्यकर्म इस आने वाले राज्य के चिह्न हैं। क्योंकि परमेश्वर का राज्य और शासन यहाँ है इसलिए हमारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं। अँधा देख सकता है। लंगड़ा चल सकता है। कोढ़ी शुद्ध किए जा रहे हैं। दुष्टात्माओं को निकाला जा रहा है, और मृतकों को जिलाया जा रहा है। यह शुभ संदेश है। निसंदेह, वास्तविकता में तो शुभ संदेश क्रूस है - यीशु मसीह की मृत्यु और उसका पुनरूत्थान। यदि यीशु मरता नहीं और फिर जी नहीं उठता, तो उसने हमारे लिए उद्धार को प्राप्त नहीं किया होता। उसने

> मृत्यु की शक्ति पर विजय प्राप्त नहीं की होती। और परमेश्वर का राज्य हमारे बीच में नहीं आया होता। अतः सुसमाचार ही सर्वोत्तम संदेश है। परमेश्वर का राज्य मनुष्यजाति के लिए महानतम आशीष और आनंद है।
>
> — डॉ. पीटर चो, अनुवाद

> नए नियम में एक वास्तविक प्रश्न यह है कि परमेश्वर के राज्य और सुसमाचार में क्या संबंध है? यदि हम इस समझ के साथ आरंभ करें कि परमेश्वर का राज्य स्त्रियों और पुरूषों के मनों में परमेश्वर का अधिकार और शासन है, और वह अधिकार और शासन जीवन के उस प्रत्येक क्षेत्र में प्रकट हो रहा है जिसे उनका जीवन स्पर्श करता है। यह वह सुसमाचार, यूएंगेलियोन, अर्थात् शुभ संदेश ही है जिसके द्वारा वे उस अधिकार और शासन के तहत आते हैं, और शुभ संदेश यह है कि मसीह ने उनके पापों के लिए क्रूस पर अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। और सुसमाचार की परिवर्तन कर देने वाली उस सामर्थ्य के द्वारा, उन्हें अपने चारों ओर के संसार को परिवर्तित करने के लिए और परमेश्वर के राज्य के कार्य को उनके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लाने के लिए बुलाया गया है।
>
> — डॉ. जैफ लोमैन

अब जबकि हमने यीशु के भविष्यद्वाणीय अधिकार और कार्य का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए हम उन विधियों को देखें जिसका प्रयोग उसने अपनी सेवकाई को पूरा करने के लिए किया।

विधियाँ

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के समान भविष्यद्वाणीय कार्य को पूरा करने के लिए यीशु की प्राथमिक विधि बोलना ही थी। कहने का अर्थ यह है कि उसने मुख्य रूप से परमेश्वर के वचनों को बोलने के द्वारा लोगों को परमेश्वर की वाचा के प्रति उत्तरदाई ठहराया। उसने उन पर पापों का दोष लगाया; उसने उन्हें पश्चाताप करने और परमेश्वर की इच्छा मानने की आज्ञा दी जैसी कि पवित्रशास्त्र में प्रकट है; उसने उन्हें विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित किया; उसने उन्हें आने वाले दंड की चेतावनी दी; और उसने उन्हें आशीषें दी जो विश्वासयोग्य थे। उसने दृष्टांत कहे। उसने भविष्य के बारे में पहले से बताया। उसने प्रार्थना की। और उसने परमेश्वर के लोगों के लिए मध्यस्थता की।

रोचक बात यह है कि एक कार्य जो यीशु ने नहीं किया. वह यह था कि उसने पवित्रशास्त्र में हमारे लिए अपनी शिक्षाओं को नहीं लिखा। परंतु पुराने नियम के कुछ भविष्यद्वक्ताओं के समान उसके पास शिष्य थे जिन्होंने उसके लिए यह कार्य किया। नए नियम में चार सुमाचार हैं - मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना जिनमें यीशु के शिष्यों ने उसकी मौखिक भविष्यद्वाणीय सेवकाई को लिपिबद्ध किया है।

और पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के समान ही अपनी भविष्यद्वाणीय सेवा को करने के लिए यीशु ने बोलने के अतिरिक्त कई अन्य विधियों का प्रयोग किया - ऐसी विधियाँ जो मौखिक वार्तालाप की अपेक्षा विशेष कार्यों पर अधिक निर्भर थीं। शायद सबसे अधिक स्पष्ट तरीका जिसमें यह बात सच है, वह है उसके आश्चर्यकर्म। यीशु ने परमेश्वर के लोगों के इतिहास में किसी भी अन्य भविष्यद्वक्ता से अधिक आश्चर्चयकर्म किए। और यीशु के सामर्थ्य से भरे आश्चर्यकर्मों ने उसकी इस प्रमाणिकता की साक्षी दी कि वह परमेश्वर का राजदूत था; उन्होंने उन सब के विषय में परमेश्वर की बड़ी प्रमाणिकता को प्रकट किया जो कुछ यीशु ने कहा था।

जैसा कि यूहन्ना 10:25 में यीशु ने कहा :

जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं। (यूहन्ना 10:25)

यीशु ने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के समान प्रतीकात्मक कार्यों को भी किया। उदाहरण के लिए, उसने मत्ती 3:15-17 में प्रतीकात्मक कार्य के रूप में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बपतिस्मा लिया। और पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के समान यीशु भी आत्मिक संघर्षों में लगा रहा। उदाहरण के लिए, मत्ती 4:1-11 और लूका 4:1-13 में उसने शैतान द्वारा लाई परीक्षा पर विजय प्राप्त की। और मरकुस 1:25-26 और 5:13 में उसने दुष्टात्माओं को निकाला।

यीशु के भविष्यद्वाणीय अधिकार, कार्य और विधियों पर ध्यान देने के द्वारा हम देख सकते हैं कि उसने भविष्यद्वक्ता के कार्यभार को सच्चाई के साथ पूरा किया। और इसी कारण हम आश्वस्त हो सकते हैं कि उसने जो भी भविष्यद्वाणी की है, वह पूरी होगी; यीशु के शब्द विश्वासयोग्य और सत्य हैं। और इसीलिए हमारे पास उसकी सुनने और मानने की जिम्मेदारी है। हममें से जो परमेश्वर के वाचाई समाज में हैं, यीशु के वचनों के प्रति हमारी आज्ञाकारिता हमें परमेश्वर की वाचाई आशीषों की ओर, जबकि हमारी अनाज्ञाकारिता हमें उसके दंड की ओर ले जाती है। और वे लोग जो परमेश्वर के लोगों के सहभागी नहीं है, यीशु के भविष्यद्वाणीय शब्द उनके विरुद्ध दंड की चेतावनी हैं जो उसको ठुकरा देते हैं, और उनके लिए जीवन की प्रतिज्ञा हैं जो अपने पापों से पश्चाताप करेंगे और विश्वास के साथ उसे ग्रहण करेंगे।

यह देखने के बाद कि यीशु ने भविष्यद्वक्ता के कार्यभार की योग्यताओं और कार्यप्रणाली को पूरा किया, आइए हम संक्षेप में यह देखें कि उसने भविष्यद्वाणीय कार्य के लिए पुराने नियम की अपेक्षाओं को कैसे पूरा किया।

अपेक्षाएँ

इस अध्याय में पहले हमने कहा था कि पुराने नियम के अंत में भविष्यद्वक्ताओं के लिए परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरणों से संबंधित कम से कम तीन अपेक्षाएँ थीं : वहाँ प्रभु का भविष्यद्वाणीय संदेशवाहक होगा; वहाँ मूसा के जैसा एक अंतिम भविष्यद्वक्ता होगा; और वहाँ भविष्यद्वाणी की पुनर्स्थापना होगी। और जैसा कि हम देखेंगे, ये सारी अपेक्षाएँ यीशु की सेवकाई और व्यक्तित्व में पूरी हुईं।

प्रभु के संदेशवाहक से आरंभ करते हुए, आइए यीशु के साथ संबंध में हम इनमें से प्रत्येक अपेक्षा को देखें।

प्रभु का संदेशवाहक

इस अपेक्षित भविष्यद्वाणीय संदेशवाहक के बारे में यशायाह 40:3-5 में भविष्यद्वाणी की गई है, जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **किसी की पुकार सुनाई देती है, "जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिए अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो। हर एक तराई भर दी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाए, जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊँचा-नीचा है वह चौरस किया जाए। तब यहोवा का तेज प्रगट होगा और सब प्राणी उसको एक संग देखेंगे; क्योंकि यहोवा ने आप ही ऐसा कहा है"। (यशायाह 40:3-5)**

जिस विशेष भविष्यद्वक्ता के बारे में यहाँ भविष्यद्वाणी की गई है वह उस प्रभु के आगमन की घोषणा करने वाला था, जो अपने सारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा और दाऊद के राजतंत्र को पुनर्स्थापित करेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और वास्तव में यीशु वह प्रभु भी था जो अपने शत्रुओं को पराजित करने आया था, और वह राजा था जो दाऊद के सिहांसन का उत्तराधिकारी था। यीशु के द्वारा परमेश्वर अंतिम दिनों और परमेश्वर के राज्य से संबंधित सभी भविष्यद्वाणियों को पूरा कर रहा था। परंतु उसका संदेशवाहक कौन था? प्रभु के संदेशवाहक से संबंधित भविष्यद्वाणी यीशु में किस प्रकार पूरी हुई? यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था, जिसने यीशु के आगमन की घोषणा की।

प्रेरित यूहन्ना के सुसमाचार 1:23 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शब्दों को सुनिए :

> उसने कहा कि जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है, "मैं जंगल में एक पुकारने वाला का शब्द हूँ, 'कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो'"। (यूहन्ना 1:23)

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को उस परमेश्वर के आगमन की घोषणा करने की भूमिका दी गई थी, जो कि एक योद्धा के रूप में अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने और अपने लोगों को आशीष देने के लिए आएगा। और जिसकी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने घोषणा की और जिसका वह संदेशवाहक था, वह यीशु था।

यूहन्ना के सुसमाचार 1:32-34 से इस वृत्तांत को सुनिए :

> और यूहन्ना [बपतिस्मा देने वाले] ने यह गवाही दी, "मैंने आत्मा को कबूतर की नाई आकाश से उतरते देखा है, और वह [यीशु] पर ठहर गया। और मैं तो उसे पहिचानता न था, परंतु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने के लिए भेजा, उसी ने मुझ से कहा, 'जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला होगा' और मैंने देखा, और गवाही दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है"। (यूहन्ना 1:32-34)

यूहन्ना ने यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचानने के द्वारा अपने भविष्यद्वाणीय मिशन को पूरा किया जो परमेश्वर के शत्रुओं को हराने के द्वारा और दाऊद के घराने के सिंहासन को पुनर्स्थापित करने के द्वारा परमेश्वर के राज्य को लाने के लिए आया था।

भविष्य की भविष्यद्वाणी के लिए पुराने नियम की दूसरी अपेक्षा जिसे यीशु ने पूरा किया, यह थी कि मूसा के समान एक अंतिम भविष्यद्वक्ता होगा।

मूसा के समान भविष्यद्वक्ता

व्यवस्थाविवरण 18:15 में, मूसा ने इस्राएल से ये वचन कहे :

> तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा, तू उसी की सुनना। (व्यवस्थाविवरण 18:15)

प्रेरितों के काम 3:22-23 में पतरस ने स्पष्ट रीति से सिखाया कि यीशु मूसा के जैसा भविष्यद्वक्ता था जिसके बारे में पुराना नियम पहले से बताता है।

यीशु ने ऐसे परिमाप से आश्चर्यकर्म किए जैसे मूसा के बाद से किसी ने नहीं किए थे। उसने मूसा के समय से सबसे अधिक ज्ञान के साथ भविष्यद्वाणी की। वह मूसा के समान परमेश्वर को आमने सामने देखता हुआ जानता था। और यीशु ने सुनिश्चित किया जो विश्वास से उसकी भविष्यद्वाणीय शिक्षा का प्रत्युत्तर देंगे उन्हें सिद्ध रूप से वाचा का पालन करने वाले माना जाएगा, और इस प्रकार वे परमेश्वर के वाचाई राज्य की पूरी आशीषों के उत्तराधिकारी होंगे।

जैसा कि हम इब्रानियों 3:5-6 में पढ़ते हैं :

> मूसा तो उसके सारे घर में सेवक की नाई विश्वासयोग्य रहा, कि जिन बातों का वर्णन होने वाला था, उन की गवाही दे। पर मसीह पुत्र की नाई उसके घर का अधिकारी है, और उसका घर हम है, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें। (इब्रानियों 3:5-6)

वास्तव में, नया नियम यह सिखाता है कि मूसा के बाद से यीशु न केवल अब तक का सबसे महान भविष्यद्वक्ता था, बल्कि वह सब समयों का सबसे महान भविष्यद्वक्ता था। इब्रानियों 1:1-2 सिखाता है कि यीशु से पहले, परमेश्वर का कार्य उसके भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा एक लंबे समय तक चलता रहा और इसने विभिन्न प्रकार के माध्यमों और विधियों को सम्मिलित किया। परंतु परमेश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना के इन दिनों में परमेश्वर ने हमें अपने पुत्र अर्थात् सबसे बड़े भविष्यद्वक्ता के द्वारा और भी बड़ा प्रकाशन दिया है। जैसा कि हम यूहन्ना 1:18 और 14:9 में देखते हैं, यीशु पिता की पहचान, इच्छा और उद्धार का सबसे संपूर्ण और सबसे स्पष्ट प्रकाशन है। वास्तव में, यूहन्ना 1:14 के अनुसार यीशु ही परमेश्वर का देहधारी वचन है।

> यीशु से पहले आए सारे भविष्यद्वक्ताओं से अधिक यीशु के प्रकाशन की श्रेष्ठता इस बात पर आधारित है कि यीशु न केवल परमेश्वर के वचन की घोषणा करता है, परंतु वह स्वयं परमेश्वर का देहधारी वचन है। वह परमेश्वर के वचन को साकार कर देता है। उससे पहले आए सारे भविष्यद्वक्ता उतने महत्वपूर्ण थे जितनी कि उनकी सेवकाई, और वे परमेश्वर के वचन के वक्ता थे। जब यीशु आता है तो वह निश्चित रूप से परमेश्वर के वचन का वक्ता है; वह निश्चित रूप से परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता है; पश्चाताप का प्रचार करता है; वह परमेश्वर की आज्ञाओं का प्रचार करता है, परंतु क्योंकि वह देहधारी वचन है, वह इसे इस तरीके से करता है, कि वह परमेश्वर की पहचान को साकार भी कर देता है।
>
> — डॉ. रोब लिस्टर

> इसलिए जब यीशु एक भविष्यद्वक्ता के रूप में आता है, तो वह एक भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में आता है, और इस्राएल में इन सारी भूमिकाओं को पूरा करता है, मसीह में ये सारे कार्यभार पूरे हो जाते हैं। भविष्यद्वक्ता के रूप में वह वही है जिसके बारे में स्वयं मूसा ने भविष्यद्वाणी की थी, “मेरे जैसा” एक आएगा। तब वह वास्तव में और सारी भविष्यद्ववाणियों का अंत कर देगा। क्योंकि वह कारण कि क्यों परमेश्वर ने अंत में अपने पुत्र के द्वारा बात की, यह है कि और कोई भी भविष्यद्वक्ता परमेश्वर नहीं था, और कोई भी भविष्यद्वक्ता अपने में परमेश्वर के पूर्ण प्रकाशन को आत्मसात नहीं कर सकता। परंतु अब वह आता है जो वास्तव में प्रकाशन देने वाला है। अब वह आता है जो जानता है कि परमेश्वर कौन है क्योंकि वह स्वयं परमेश्वर है। वह परमेश्वर की सारी योजनाओं को जानता है। वह परमेश्वर की पवित्रता को जानता है। वह सटीक रीति से जानता है कि परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए क्या किया जाना चाहिए। इसलिए वह अपने में उन सारी चिंताओं को रखता है जो परमेश्वर में है, उन सब रुचियों को जिसमें परमेश्वर रूचि रखता है, वह जानता है क्योंकि वह परमेश्वर है। और इसलिए, हमारे भविष्यद्वक्ता के रूप में मसीह के प्रकाशन का अनुग्रह उसके व्यक्तित्व में और फिर उसके शब्दों में है, हमें यह दिखाता है कि हमारे पास इसके अतिरिक्त पूछने के लिए और कोई भी प्रश्न नहीं है जिसे मसीह ने प्रकट कर दिया है क्योंकि वह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> इतना बुद्धिमान है कि यह जानता है कि वह क्या प्रकट कर सकता है और उसे क्या प्रकट नहीं करना चाहिए। और वह पूरी तरह से ज्ञानवान है कि वह जो भी करता है उसका हमें संपूर्ण सत्य और संपूर्ण उदाहरण प्रदान करे। वह सिद्ध भविष्यद्वक्ता है।
>
> — डॉ. थॉमस नैटल्स

भविष्यद्वाणीय कार्य की पूर्णता के रूप में यीशु के महत्व पर आवश्यकता से अधिक बल नहीं दिया जा सकता, अर्थात् यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। वह पिता की इच्छा और उद्देश्यों का सबसे स्पष्ट, निश्चित प्रकाशन है, जो परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लिए परमेश्वर की माँगों और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं दोनों को प्रकट कर रहा है।

यीशु में पुराने नियम की भविष्यद्वाणी की अपेक्षाओं के पूरे होने के जिस तीसरे तरीके को हम देखते हैं, उसका संबंध भविष्यद्वाणी की पुनर्स्थापना से है।

भविष्यद्वाणी की पुनर्स्थापना

जैसे कि हम पहले देख चुके हैं, पुराने नियम ने एक ऐसे दिन का पूर्वानुमान लगाया था जब झूठे भविष्यद्वक्ताओं को नाश कर दिया जाएगा और सच्चे भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लोगों के बीच में अधिक संख्या में पाए जाएँगे। और यीशु के द्वारा यह अपेक्षा वास्तविकता में बदलने लगी। सच्चे भविष्यद्वक्ताओं की वृद्धि के संबंध में यह तब आरंभ हुआ जब यीशु ने अपने बहुत से प्रेरितों को संसारभर में सामर्थ्य के साथ वचन का प्रचार करने के लिए अभिषिक्त किया। और यह पिन्तेकुस्त के दिन भी लगातार जारी रहा जब उसने अपने आत्मा को कलीसिया पर उंडेला, जिसके फलस्वरूप वे सभी अन्य भाषाओं में भविष्यद्ववाणी करने लगे।

प्रेरितों के काम 2:4 में दी गई इस घटना के विवरण को, और उसके बाद प्रेरितों के काम 2:14-18 में पतरस की व्याख्या को सुनिए :

> और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे . . . पतरस कहने लगा, “हे यहूदियो और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो . . . मेरी बातें सुनो। यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी : ‘परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उँडेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे’।” (प्रेरितों के काम 2:4, 14-18)।

आरंभिक कलीसिया में, यीशु ने अपने आत्मा को इसलिए भेजा कि कलीसिया भविष्यद्वाणी के लिए सामर्थी बने। यद्यपि आधुनिक कलीसियाएँ अक्सर भविष्यद्वाणी की वर्तमान निरंतरता के विषय पर बहस करती हैं, परंतु कोई भी इस बात पर संदेह नहीं कर सकता कि यह एक ऐसी सामर्थी और प्रचलित सेवकाई थी जिसका प्रयोग यीशु ने राज्य के आरंभिक दिनों में अपनी कलीसिया को स्थापित करने के लिए किया था।

परंतु झूठी भविष्यद्वाणी के बारे में क्या कहें? झूठी भविष्यद्वाणी के अंत की पुराने नियम की अपेक्षा किस प्रकार यीशु में पूरी हुई? आख़िरकार, नए नियम के बहुत से अनुच्छेद झूठी भविष्यद्वाणी को

कलीसिया में निरंतर चलने वाली समस्या के रूप में पहचानते हैं। हम इसे मत्ती 7:15 और 24:11, 24; 2 पतरस 2:1; 1 यूहन्ना 4:1 और अन्य कई अनुच्छेदों में देखते हैं।

इसका उत्तर द्विरूपीय है। एक ओर तो झूठी भविष्यद्वाणी उन सच्चे भविष्यद्वक्ताओं की वृद्धि के कारण सीमित होने लगी, जिनका कार्य झूठी भविष्यद्वाणी को खोजना और उसकी निंदा करना था।

1 कुरिन्थियों 14:29 में इस विषय पर पौलुस की शिक्षा को सुनिए :

> **भविष्यद्वक्ताओं मे से दो या तीन बोलें, और शेष उनके वचन को परखें ।(1 कुरिन्थियों 14:29)**

पौलुस ने स्पष्ट किया कि कलीसिया के सच्चे भविष्यद्वक्ताओं का एक कार्य झूठी भविष्यद्वाणियों को जड़ से उखाड़ फेंकना और उन्हें रोकना है।

दूसरी ओर, यह स्पष्ट है कि झूठी भविष्यद्वाणी एक निरंतर चलने वाली समस्या है। परंतु अंत में, यीशु झूठे भविष्यद्वक्ताओं और उनके वचनों को पूरी तरह से उखाड़ फेंकेगा। जब वह दंड देने के लिए वापस आएगा और अपने राज्य को पूर्ण करेगा, तो वह अंततः पूरी तरह से अटल रूप से सारे झूठे भविष्यद्वक्ताओं का नाश करेगा। और उस समय तक हम इस विचार के साथ जीएँगे कि यीशु ने अपने राज्य का आरंभ कर दिया है और झूठी भविष्यद्वाणी को रोकना शुरू कर दिया है, परंतु साथ ही यह भी कि उसने अभी तक उन्हें वह दंड नहीं दिया है जो हमेशा के लिए झूठी भविष्यद्वाणी का अंत कर देगा।

यीशु भविष्यद्वक्ता के कार्यभार के लिए पूरी तरह से योग्य है; वह विश्वासयोग्यता और सच्चाई के साथ भविष्यद्वक्ता के कार्यों को पूरा करता है; और वह भविष्यद्वक्ता के कार्य के लिए पुराने नियम की अपेक्षाओं को पूरा करता है। और यही शुभ संदेश है। पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने लोगों से प्रतिज्ञा की थी कि उसके लोगों की वाचाई विश्वासयोग्यता में अगुवाई करने के लिए एक दिन मूसा के समान एक भविष्यद्वक्ता उठेगा। और यीशु में अब वह प्रतिज्ञा पूरी हो रही है। इसी कारण से हम यीशु को सभी समयों के एक महान भविष्यद्वक्ता के रूप में पहचानते हैं और उसका आदर करते हैं; हम उसके शब्दों को सुनते और उन पर विश्वास करते हैं; और हम उसकी शिक्षाओं के प्रति समर्पित रहते हैं और उनका पालन करते हैं। और हम यह इस भरोसे के साथ करते हैं कि उसका भविष्यद्वाणीय वचन सच्चा है, और कि यह परमेश्वर की वाचाई आशीषों के हमारे अनंत आनंद की ओर अगुवाई करेगा।

भविष्यद्वाणीय कार्यभार की पुराने नियम की पृष्टभूमि और नए नियम की पूर्णता की जाँच कर लेने के बाद, अब हम अपने तीसरे विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं, यीशु के भविष्यद्वाणीय कार्य का आधुनिक उपयोग।

आधुनिक उपयोग

मसीह के भविष्यद्वाणीय कार्य के आधुनिक उपयोग को समझने का एक सबसे सुविधाजनक तरीका *वैस्टमिंस्टर लार्जर कैटेकिज्म* या वैस्टमिंस्टर विशाल प्रश्नोत्तरी की उत्तर संख्या 43 में पाया जा सकता है, जो कहता है :

> **मसीह कलीसिया के प्रति अपने प्रकाशन में, प्रत्येक युग में अपने आत्मा और वचन के द्वारा, और प्रशासन के विभिन्न तरीकों के द्वारा उनकी उन्नति और उद्धार से संबंधित सब बातों में परमेश्वर की पूर्ण इच्छा के साथ भविष्यद्वक्ता के कार्यभार को संचालित करता है।**

इस उत्तर में, कैटेकिज्म कलीसिया के प्रति मसीह के प्रकाशन के संबंध में मसीह के भविष्यद्वाणीय कार्य को सारगर्भित करता है। और यह मसीह के प्रकाशन देने के कार्य के कम से कम दो पहलुओं का उल्लेख करता है। पहला, यह उसकी आत्मा और शब्द के द्वारा मसीह के प्रकाशन के विस्तार के बारे में बात करता है, विशेषकर, प्रत्येक युग में, और प्रशासन के विभिन्न तरीकों में। और दूसरा, यह मसीह की भविष्यद्वाणीय प्रकाशन की विषय-वस्तु की पहचान करता है, अर्थात् उनकी उन्नति और उद्धार से संबंधित सब बातों में परमेश्वर की पूर्ण इच्छा।

क्योंकि वैस्टमिंस्टर लार्जर कैटेकिज्म के द्वारा दिया गया सारांश बहुत सहायक है, इसलिए हम इसका प्रयोग यीशु के भविष्यद्वाणीय कार्य के हमारे अपने आधुनिक उपयोग के नमूने के रूप में करेंगे। पहला, हम मसीह द्वारा प्रदान किए जाने वाले भविष्यद्वाणीय प्रकाशन के विस्तार, और हमारे लिए इसके अर्थों पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम मसीह से प्राप्त भविष्यद्वाणीय प्रकाशन की विषय-वस्तु और उन दायित्वों पर ध्यान देंगे जो यह हम पर डालता है। आइए सबसे पहले हम भविष्यद्वाणीय प्रकाशन के विस्तार को देखें जिसे हम अपने भविष्यद्वक्ता मसीह से प्राप्त करते हैं।

प्रकाशन का विस्तार

जब कैटेकिज्म यह कहता है कि मसीह "प्रत्येक युग में अपने आत्मा और वचन के द्वारा, और प्रशासन के विभिन्न तरीकों के द्वारा" अपनी कलीसिया को प्रकाशन प्रदान करता देता है, तो यह बाइबल के सत्य की पुष्टि करता है कि मसीह ही वह है जो कि पूरे पवित्रशास्त्र और सच्ची भविष्यद्ववाणी के द्वारा हमसे बात करता है।

यीशु ने स्वयं कई भविष्यद्वाणीय वचनों को बोला है, परंतु उसने अपने से पहले और बाद में सच्चे भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरित करने के लिए पवित्र आत्मा को भी भेजा, जिन्होंने स्वयं विभिन्न तरीकों से अपनी सेवाओं को पूरा किया। और हमारे लिए इस प्रक्रिया से सीखने की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पूरी बाइबल, अर्थात् नया और पुराना नियम, अपनी कलीसिया के लिए मसीह का भविष्यद्वाणीय वचन है।

अब, यह सोचना विचित्र हो सकता है कि पूरी बाइबल मसीह का वचन है। आखिरकार, यीशु ने स्वयं पवित्रशास्त्र की कोई पुस्तक नहीं लिखी। और यहाँ तक कि सुसमाचार में भी उसके द्वारा कही गई बातों के उद्धरणों के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ है। परंतु संपूर्ण कलीसियाई इतिहास में यह शिक्षा सुसंगत और निरंतर बनी रही है।

उदाहरण के लिए, आरंभिक कलीसियाई धर्मवृद्ध ओरिगन ने तीसरी सदी के आरंभ में लिखी अपनी पुस्तक *ऑन फर्स्ट प्रिंसिपल्स* की प्रस्तावना में पवित्रशास्त्र को प्रेरित करने में यीशु के भविष्यद्वाणीय कार्य के बारे में लिखा है। सुनिए उसने क्या कहा :

> मसीह के शब्दों से हमारा यह अर्थ नहीं है कि केवल वही शब्द जो उसने तब बोले जब वह मनुष्य बना . . . क्योंकि उस समय से पहले, मसीह, अर्थात् परमेश्वर का वचन मूसा और अन्य भविष्यद्वक्ताओं में था। इसके साथ-साथ ... उसके स्वर्गारोहण के बाद उसने अपने प्रेरितों के वचनों में बात की।

ओरिगन के शब्द, जिन्हें संपूर्ण कलीसियाई इतिहास में प्रमाणित किया गया है, यह कहते हैं कि पवित्रशास्त्र अपने सारे भागों में मसीह का भविष्यद्वाणीय वचन है। और यह विचार पूरी तरह से बाइबल पर आधारित है।

एक बात यह भी है, बाइबल यह सिखाती है कि यीशु की भविष्यद्वाणीय सेवकाई वास्तव में उसके देहधारण और पृथ्वी पर उसकी सेवकाई से पहले से जारी है, क्योंकि उसने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को भी प्रेरित किया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

1 पतरस 1:10-11 में पतरस के शब्दों को सुनिए :

> इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत खोजबीन और जाँच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उन में था, और पहले ही से मसीह के दुःखों की और उसके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। (1 पतरस 1:10-11)

पतरस ने सिखाया कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने जब परमेश्वर की छुटकारे की प्रतिज्ञाओं की पूर्णता के बारे में अध्ययन किया और सोचा, तो मसीह ने उनको प्रेरित और उत्साहित करने के लिए पवित्र आत्मा को भेजा। इस भाव में, पूरा पुराना नियम मसीह का वचन है।

जिस प्रकार मसीह की भविष्यद्वाणीय सेवकाई का आरंभ उसकी पृथ्वी पर की सेवकाई से पहले हुआ, उसी प्रकार उसके स्वर्गारोहण के बाद भी यह निरंतर जारी है, क्योंकि यीशु ने प्रेरितों और नए नियम के अन्य लेखकों को भी उनके कार्यों में प्रेरित करने के लिए अपने आत्मा को भेजा।

जैसे कि यूहन्ना 16:13-15 में यीशु ने कहा :

> सत्य का आत्मा . . . तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा ... जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। (यूहन्ना 16:13-15)

हमारे लिए यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि संपूर्ण बाइबल हमारे लिए मसीह का वचन है क्योंकि यह दृढ़ता से स्वीकार करती है कि पवित्रशास्त्र की प्रत्येक पुस्तक आधुनिक कलीसिया के जीवन के लिए आधिकारिक और प्रासंगिक है। मसीह को हमारे भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकार करने का अर्थ है उसके सारे वचनों को ऐसे स्वीकार करना जैसे कि वे परमेश्वर के राज्य और वाचा के प्रकाशन हैं, जिसमें पुराना नियम और नया नियम दोनों सम्मिलित हैं। हम सुसमाचारों में या फिर पूरे नए नियम में से यीशु के वचनों के उद्धरणों को मानने से ही संतुष्ट नहीं हो सकते। हमें बाइबल की सब बातों को पढ़ना, समझना और मानना है क्योंकि हमारे लिए यह पूरा का पूरा मसीह का वचन है।

अब, निःसंदेह हमें इसे इन रूपों में करना है जो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से दिखाए। उदाहरण के लिए, कालांतर अर्थात् बाद का प्रकाशन, जैसे कि नया नियम, बारम्बार यह दिखाता है कि हमें पहले के प्रकाशन, जैसे पुराना नियम, को कैसे समझें और लागू करें। परंतु मौलिक सिद्धांत अपरिवर्तित रहते हैं : सब समयों की उसकी कलीसिया के लिए संपूर्ण बाइबल मसीह का वचन है।

> जब हम सब बाइबल के पास आते हैं, तो मैं सोचता हूँ कि हम यह पाते हैं कि हमारे पास अपने-अपने पसंदीदा अनुच्छेद होते हैं, हमारे पास वचन के पंसदीदा भाग होते हैं, और बहुत से लोग उचित रीति से ही सबसे पहले सुसमाचारों की ओर और फिर मसीह के वचनों की ओर आकर्षित होते हैं। यह वह विषय है, जिसकी पुष्टि वचन ने की है, और आरंभिक मसीहियों ने और पहली सदी के लोगों ने नियमित रूप से इसकी पुष्टि की है कि संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और इसलिए यह लाभदायक है, यह सिखाने के लिए उपयोगी है, और हमारे जीवन की गलतियों के सुधारने के लिए उपयोगी और यह हमें दिखाता है कि सही तरीका क्या है, सीधा और सही मार्ग क्या है, जीवनदायक मार्ग क्या है। इसलिए, यद्यपि हमें अनुमति है कि हमारे कुछ पसंदीदा अनुच्छेद हों और हम कुछ खास पुस्तकों और वचनों के प्रति आकर्षित हों, फिर भी पवित्रशास्त्र की

> संपूर्ण गवाही महत्वपूर्ण है क्योंकि हम संपूर्ण लोग हैं, और जब हम दूसरों के साथ संबंध रखते हैं, तो यह हमें मुख्य केंद्र के रूप में परमेश्वर के वचन के साथ एकरूपता में बाँध देता है।
>
> — डॉ. जेम्स डी. स्मिथ III

> सही रूप से समझें तो यीशु हमारा भविष्यद्वक्ता है, वह जो सारे भविष्यद्वाणीय प्रकाशन की पूर्णता है, जिसमें परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाएँ पूरी हो चुकी हैं, अर्थात् पुराने नियम का प्रकाशन भी उसका ही वचन है। सुसमाचार के संदेश जहाँ वह प्रत्यक्ष रूप में बात करता है, उसका वचन है। इसी बात को और आगे बढाएं तो प्रेरितों को दी गई उसकी बुलाहट - वे उसके संदेशवाहकों के रूप में कार्य करते हैं, वे आत्मा की प्रेरणा के तहत कार्य करते हैं कि हमें उसका वचन प्रदान करें और यह सिखाएँ कि वह कौन हैं और उसने क्या किया है। ताकि भले ही वह पुराना नियम क्यों ने हो, या फिर भले ही वह नया नियम क्यों न हो, या फिर भले ही वह सुसमाचार क्यों न हो, भले ही वे पत्रियाँ क्यों न हो, पूरी बाइबल हमारे लिए है और हमारे निर्देशन के लिए है। यह हमारे लिए परमेश्वर का वचन है जिसका हमें पूरी तरह से पालन करना है और जिसे हम यीशु मसीह के आगमन और उन सभी कार्यों के प्रकाश में पढ़ते हैं जिन्हें उसने हमारे लिए पूरा किया है।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

मसीह के भविष्यद्ववाणीय प्रकाशन की सीमा की इस समझ को मन में रखते हुए, आइए हम भविष्यद्वाणीय प्रकाशन की उस विषय-वस्तु की ओर मुड़ें जिसे हम मसीह से प्राप्त करते हैं, और उन दायित्वों की ओर भी जिन्हें यह हमारे जीवनों पर रखता है।

प्रकाशन की विषय-वस्तु

वैस्टमिंस्टर लार्जर कैटेकिज्म यह कहने के द्वारा पवित्रशास्त्र की विषय-वस्तु को सारगर्भित करता है कि मसीह ने भविष्यद्वाणीय रूप में अपनी कलीसिया के समक्ष "उनकी उन्नति और उद्धार से संबंधित सब बातों में परमेश्वर की पूर्ण इच्छा" को प्रकट किया है। अब, एक भाव में, यह पवित्रशास्त्र की पर्याप्तता की पुष्टि करने वाला एक विस्तृत वाक्य है। परंतु जब हम इसे मसीह के भविष्यद्वाणीय कार्य के विशेष संदर्भ में देखते हैं, तो यह इस बात को देखने में हमारी सहायता करता है कि संपूर्ण बाइबल हमें मसीह के द्वारा दी गई है, जो परमेश्वर की वाचा का मुख्य संदेशवाहक है, ताकि वह हमें उसकी वाचा की शर्तों के संबंध में निर्देश दे; और ताकि हमें इसके श्रापों से दूर रहने के लिए, और विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता के द्वारा इसकी आशीषों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सके। परमेश्वर की इच्छा उसकी वाचा की शर्त है और हमारे जीवनों में इसका उपयोग है। और उस वाचा की शर्तों की हमारी सही समझ ही हमारी उन्नति है, जबकि हमारा उद्धार वाचा की आशीषों से मिलकर बना है।

संपूर्ण बाइबल परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर का वाचाई वचन है। और क्योंकि मसीह ही परमेश्वर है, इसलिए संपूर्ण बाइबल भी उसका वचन है। उदाहरण के लिए, यीशु ने लगातार पुराने नियम की चिरस्थायी वैधता की पुष्टि की थी। और अपनी सेवकाई के लगभग अंत में, उसने अपने मूल प्रेरितों के पास पवित्र आत्मा को भेजने की प्रतिज्ञा की थी ताकि वे और अधिक पवित्रशास्त्र को लिख सकें और अधिकृत कर सकें, जो कि अब हमारा नया नियम है।

यीशु ने अपने अनुयायियों को यह भी सिखाया कि वे उनके अपने समय में परमेश्वर के वाचाई अनुबंधों को कैसे लागू करें। और उसने उन्हें परमेश्वर की इच्छा को मानने के लिए प्रेरित किया ताकि वे वाचा की आशीषों को प्राप्त करें और ईश्वरीय दंड से बचें। जैसा कि पौलुस ने बाद में लिखा, सारा पवित्रशास्त्र कलीसिया को इसलिए दिया गया है कि वह हमें अपने प्रभु की सेवा करने और उसकी आज्ञा का पालन करने के योग्य बनाए।

इन विचारों की अनुरूपता में, हम पवित्रशास्त्र में मसीह के भविष्यद्वाणीय प्रकाशन की विषय-वस्तु के दो पहलुओं पर ध्यान देंगे। पहला, हम इस बात का वर्णन करेंगे कि भविष्यद्वक्ता के उसके कार्यभार की सही समझ सारे पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में हमारी सहायता कैसे कर सकती है, ताकि हम परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप उन्नति करें। और दूसरा, हम इस बात का वर्णन करेंगे कि मसीह के भविष्यद्वाणीय कार्यभार की सही समझ कैसे हमारी अगुवाई कर सकती है जब हम पवित्रशास्त्र के प्रति समर्पित होते हैं, ताकि हम उद्धार की वाचाई आशीषों को प्राप्त करें। आइए इस विचार के साथ आरंभ करें कि भविष्यद्वक्ता के रूप में मसीह की भूमिका पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या को प्रभावित करती है।

पवित्रशास्त्र की व्याख्या

प्राचीन मध्य पूर्व में, लोगों ने उन संदेशों का प्रत्युत्तर देने के अपने उत्तरदायित्वों को पहचाना जिन्हें सुज़ेरियन राजाओं ने अपने राजदूतों के पास भेजा था। इन संदेशों की उपेक्षा कर देने के बहुत ही गंभीर परिणाम होते थे। और परमेश्वर के प्रकाशन के साथ भी ऐसा ही है। जब परमेश्वर अपने लोगों के समक्ष अपनी इच्छा को प्रकट करता है, तो वह हमसे अपेक्षा करता है कि हम उसके वचनों को सुनें ताकि हम समझ सकें कि वह क्या चाहता है, और आज्ञाकारिता के साथ प्रत्युत्तर दे सकें ताकि हम उसके उद्धार को प्राप्त करें। इस प्रकाश में देखने के द्वारा, पवित्रशास्त्र के वे वचन जो मसीह ने पवित्र आत्मा के द्वारा दिए हैं, किन्हीं विषयों पर किसी के व्यक्तिगत दृष्टिकोण नहीं हैं। ये महान राजा के वाचाई संदेश हैं, और वे आज्ञाकारी प्रत्युत्तर की मांग करते हैं।

जैसा कि हम इब्रानियों 2:2-3 में पढ़ते हैं :

> **क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक ठीक बदला मिला। तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रह कर क्योंकर बच सकते हैं? जिस की चर्चा पहिले पहिल प्रभु के द्वारा हुई। (इब्रानियों 2:2-3)**

वे जो यीशु के वचन को ठुकरा देते हैं, वे वाचा के अनंत श्रापों के दुख उठाने के लिए छोड़ दिए जाते हैं। परंतु जो उसके संदेश को विश्वास और आज्ञाकारिता से ग्रहण करते हैं वे उद्धार और अनंत जीवन की वाचाई आशीषों को प्राप्त करते हैं।

क्योंकि पूरे पवित्रशास्त्र में मसीह के वचन का अभिप्राय सदैव परमेश्वर के लोगों के बीच उसकी वाचा को संचालित करने का रहा है, इसलिए इसकी व्याख्या करने का सबसे उत्तम तरीका वाचा की संरचना के अनुसार है। जैसा कि हम देख चुके हैं, इस संरचना के मूलभूत तत्व हमारे प्रति परमेश्वर की भलाई, वह विश्वासयोग्यता जो वह हमसे चाहता है, और आज्ञाकारिता के लिए आशीषों और अवज्ञाकारिता के लिए श्रापों के प्रतिज्ञात परिणाम हैं।

जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा, ये तत्व यीशु के जन्म से पहले संपूर्ण पुराने नियम में प्रमुखता से थे। मसीह के प्रेरितों ने भी मसीह के स्वर्गारोहण के बाद इन विषयों के बारे में लगातार लिखा है। और इससे बढ़कर, इन्हीं विषयों को हम मसीह की पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान उसकी भविष्यद्वाणीय सेवकाई में देखते हैं। उदाहरण के लिए, यीशु ने मत्ती 5:45 और 6:26-33 जैसे अनुच्छेदों में परमेश्वर की भलाई के बारे में बात की है। उसने मानवीय विश्वासयोग्ता की अपेक्षा के बारे में सिखाया,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जैसा कि हम मत्ती 25:14-30 में देखते हैं। और उसने उन परिणामों पर बल दिया जो कि मानवीय प्रतिक्रियाओं के कारण आते हैं, जैसा कि हम लूका 13:1-8 और 12:35-38 में देखते हैं।

यदि हम बाइबल पढ़ते समय इन वाचाई संरचनाओं को ध्यान में रखें, तो यह पूरे पवित्रशास्त्र के अर्थ को समझने में हमारी सहायता करेगा। भले ही हम ऐतिहासिक विवरणों को, या फिर काव्य साहित्य को, या फिर प्रज्ञा साहित्य को, या पत्रियों को या भविष्यद्वाणी के कार्यों को ही क्यों न पढ़ रहे हों, हमें हमेशा इस तरह के प्रश्न पूछने चाहिए : यह अनुच्छेद कैसे अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की भलाई को प्रकट करता है? यह उसके लोगों से उसके द्वारा मांगी जाने वाली विश्वासयोग्यता को कैसे प्रकट करता है? यह उन श्रापों के बारे में क्या कहता है जो उन पर आ पड़ेंगे जो विश्वासयोग्य बने रहने से इनकार कर देते हैं? यह उनको किस तरह की आशीषें प्रदान करता है जो उसकी सुनते और आज्ञा का पालन करते हैं? सब कुछ जो पवित्रशास्त्र सिखाता है वह परमेश्वर की भलाई, कृपा और सहायता से, उन माँगों और कानूनों से जिनकी वह हमसे हमारी विश्वासयोग्यता में पूरी करने की अपेक्षा करता है; और आज्ञाकारिता के फलस्वरूप मिलने वाले पुरस्कार, और अनाज्ञाकिरता के फलस्वरूप मिलने वाले दंड से संबंधित है।

मसीह के अनुयायी आधुनिक संसार में अनगिनित प्रश्नों और चुनावों का सामना करते हैं। प्रतिदिन हम स्वयं के, अपने परिवार के, अपने कार्य के, अपने संबंधों के, अपनी कलीसिया के, और यहाँ तक कि राष्ट्रीय राजनीति के विषय में निर्णय लेते हैं। सच्चाई यह है कि हमारे लिए मसीह का भविष्द्वाणीय वचन इन सारे विषयों और इनसे भी अधिक विषयों को संबोधित करता है। परमेश्वर की वाचा हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू को समा लेती है। और जब हम यह समझ जाते हैं कि मसीह ने अपने वचन को हमें इसलिए दिया है कि हम वाचा के दायरे में रहते हुए परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में जीवन जीएँ, तो हम उसके वचन को समझने के लिए अच्छी तरह से तैयार रहते हैं और ऐसे जीवन जीते हैं जो परमेश्वर का सम्मान देता है और उसकी आशीषों की ओर अगुवाई करता है।

इस समझ के साथ कि एक भविष्यद्वक्ता के रूप में मसीह की भूमिका कैसे पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में हमारी सहायता कर सकती है, आइए उन तरीकों के बारे में सोचें जिनमें यह हमें पवित्रशास्त्र के प्रति समर्पित रहने में हमारी सहायता कर सकता है ताकि हम उद्धार की वाचाई आशीषों को प्राप्त करें।

पवित्रशास्त्र के प्रति समर्पित होना

ऐसे कई तरीके हैं जिनमें हम पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की प्रकट इच्छा के प्रति समर्पित होने के हमारे उत्तरदायित्वों को सारगर्भित कर सकते हैं, और हम इस पूरी श्रृंखला में उनमें से कईयों को देखेंगे। परंतु इस अध्याय में हम इन विषयों को मसीह के भविष्यद्वक्ता के कार्य के दृष्टिकोण से देखना चाहते हैं।

हम उन दो विचारों पर ध्यान देंगे जिन पर भविष्यद्वक्ताओं ने सामान्यतः बल दिया है : वाचा के श्रापों से बचने के लिए पाप से पश्चाताप; और वाचा की आशीषों को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर में विश्वास। आइए पहले पश्चाताप की ओर देखें।

जैसा कि आपको याद होगा, पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं का एक मुख्य कार्य पापियों को पश्चाताप की ओर प्रेरित करने के लिए वाचाई श्रापों की चेतावनी देना था। और यही नए नियम में यीशु की सेवकाई का हिस्सा भी था।

मत्ती 4:17 में सुनिए किस प्रकार मत्ती ने यीशु के प्रचार को सारगर्भित किया है :

> **उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरंभ किया, "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है"। (मत्ती 4:17)**

वास्तव में, इस विषय को संपूर्ण पुराने और नए नियम में देखा जा सकता है। यह संपूर्ण पवित्रशास्त्र का एक सबसे सामान्य विषय है। और क्योंकि पवित्रशास्त्र का प्रत्येक छोटे से छोटा भाग भी

हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा को प्रकट करता है, इसलिए उन बातों से पश्चाताप करना जिनके कारण हम उसकी इच्छा के अनुरूप जीने में असफल हो जाते हैं, प्रत्येक वचन का सही-सही उपयोग है।

जैसा कि हम सब जानते हैं, पश्चाताप परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह से फिरकर और उसकी इच्छा के प्रति समर्पित होने का कार्य है। हम अपने पापों से फिर जाते हैं, और उसी गति में हम विश्वास में परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं। आरंभिक पश्चाताप तब होता है जब लोग पहले पहल मसीह के उद्धार देने वाले विश्वास में मसीह के पास आते हैं। हम सुसमाचार के वचन को सुनते हैं और अपने पापों से पश्चाताप करते हैं। परंतु यह भी सत्य है कि हमारा पश्चाताप पूरे मसीही जीवन में चलता रहना चाहिए।

प्रोटेस्टेंट सुधारवादी मार्टिन लूथर ने 1517 ईस्वी में लिखित अपनी विख्यात 95 सूक्तियों में से पहली में इस विचार को लिया था। सुनिए उसने क्या कहा :

> जब हमारे प्रभु और स्वामी यीशु मसीह ने कहा, "पश्चाताप करो," तो उसकी इच्छा थी कि विश्वासियों का पूरा जीवन एक पश्चातापी जीवन हो।

लूथर ने पहचान लिया कि पतित मनुष्य निरंतर पाप करते रहते हैं, और इसलिए विश्वासियों को भी चाहिए कि पश्चाताप करने को प्रतिदिन का कार्य बनाएँ।

पश्चाताप करने को उत्साहित करने का एक तरीका परमेश्वर की वाचा की शर्तों की घोषणा करने के द्वारा यीशु और पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के नमूने का अनुसरण करना है। जब हम अविश्वासियों को बताते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है, तो हम उन्हें पाप को त्यागने के लिए उत्साहित कर सकते हैं ताकि वे परमेश्वर के श्रापों के दंड से बच सकें। और जब विश्वासी परमेश्वर के वचन को सुनते हैं और अपनी कमजोरियों का पता लगाते हैं, तो हमें भी पश्चाताप करना चाहिए। निःसंदेह, सच्चे विश्वासियों को परमेश्वर के अनंत श्रापों के तले आने की चिंता कभी नहीं करनी चाहिए - यीशु ने इस बात को सुनिश्चित कर दिया था जब वह हमारे लिए क्रूस पर मारा गया था। परंतु यह आज भी सत्य है कि परमेश्वर कई बार हमें ऐसे रूपों में अनुशासित करता है जो उसके वाचाई श्रापों के समान दिखाई देते हैं, जैसा कि हम इब्रानियों 12:5-11 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं।

प्रतिदिन के जीवन में पश्चाताप को बढ़ावा देने और इसका अभ्यास करने के द्वारा विश्वासी मसीह के भविष्यद्वाणीय कार्य का सम्मान करते हैं और परमेश्वर की वाचाई आशीषों का अनुसरण करते हैं। परंतु जब हम ऐसा करते हैं, तो यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि ईश्वरीय पश्चाताप हमारे पापों के कारण निराशा में पड़े रहने का विषय नहीं है। यद्यपि ग्लानि की यह स्वीकारोक्ति उदासी को ला सकती है, फिर भी इसकी रचना निराशा में ले जाने के लिए नहीं हुई है। इसकी अपेक्षा, इसका उद्देश्य परमेश्वर के साथ हमारे संबंध की और उसमें हमारे आनंद की पुनर्स्थापना करना है।

जैसा कि हम 2 कुरिन्थियों 7:10 में पढ़ते हैं :

> क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिस का परिणाम उद्धार है और फिर उस से पछताना नहीं पड़ता। (2 कुरिन्थियों 7:10)

> मैं सोचता हूँ कि प्रत्येक विश्वासी को निरंतर पश्चाताप करने की जीवनशैली के लिए बुलाया गया है, जिसका अर्थ है अपने पापों का अंगीकार करना और प्रभु के समक्ष शुद्धता के साथ आना। स्वयं यीशु कहता है कि हमें प्रतिदिन अपने क्रूस को उठाना है, जो न केवल इस बात का संकेत है कि हमें दुख उठाने के लिए तैयार रहना है, बल्कि शायद क्रूस के मार्ग में जाने के लिए भी जो कि अपने पापों के प्रति मरना और परमेश्वर की क्षमा को खोजना है, क्रूस का संपूर्ण अर्थ यही है। और यद्यपि, यह एक बड़ी सच्चाई है कि जब कोई प्रभु के पास पहले पहल आता है और अपने पापों का अंगीकार करता है, तो वह एक नया व्यक्ति बन जाता है और

> उसे शुद्ध कर दिया जाता है और यह बड़ी सच्चाई हैं जिसको हमें थामे रहना है। परंतु फिर भी, साफ साफ कहें तो हम प्रतिदिन अपने वस्त्रों को गंदा करते रहते हैं, और यदि हम चाहते हैं कि धुलकर श्वेत हों, तो हमें शुद्ध होने के लिए, नया होने के लिए वापस आने की आवश्यकता है। और पुराने नियम के स्पष्ट पद जो यह कहते हैं कि उनके लिए महान आशीषें हैं जो पश्चाताप करते हैं और प्रभु के पास वापस आ जाते हैं, जो अपने अपराधों में आनंदित नहीं होते या उन्हें अपने हृदय में नहीं रख छोड़ते, या जैसे कि भजन संहिता 32 कहता है, "क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले," या उनके पापों के लिए दोषी न ठहराए। और आप उस भजन संहिता में बड़े आनंद को देखते हैं, जब एक व्यक्ति को वास्तव में क्षमा मिल जाती है। और यह एक ऐसा अनुभव है जिसे मसीही दिन प्रतिदिन प्राप्त कर सकते हैं, पापों की क्षमा का आनंद। इसलिए अविश्वसनीय आशीषें हमें प्राप्त होती हैं यदि हम ऐसे अनुशासन, अर्थात् नए जीवन की ओर ले जाने वाले पश्चाताप का अनुसरण करते हैं।
>
> — डॉ. पीटर वाकर

पाप के प्रति पश्चाताप की इस समझ को मन में रखते हुए, आइए हम परमेश्वर में विश्वास के विषय को देखें।

यीशु और बाइबल के अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर में निरंतर विश्वास और उसकी वाचा के प्रति आज्ञाकारिता के लिए उत्साहित किया ताकि उनके श्रोता परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करें। और यही सिद्धांत आधुनिक विश्वासियों पर भी लागू होता है। यदि हम उस समय उद्धार की आशीषों को प्राप्त करने की आशा करते हैं जब उसका राज्य अपनी सारी पूर्णता मे आएगा, तो हमारे लिए यह महत्वपूर्ण कि हम विश्वास को थामे रहें और परमेश्वर की वाचा के प्रति आज्ञाकारिता के द्वारा विश्वास को प्रदर्शित करते रहें। हम इसे पूरे नए नियम में कई स्थानों पर देखते हैं, जैसे कि इफिसियों 2:8-10, 2 थिस्सलुनीकियों 1:4-12, इब्रानियों 12:1-11, और याकूब 2:14-18।

केवल एक उदाहरण के रूप में 1 यूहन्ना 5:3-4 के शब्दों को सुनिए :

> और परमेश्वर का प्रेम यह है : हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएँ कठिन नहीं। क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है, हमारा विश्वास है। **(1 यूहन्ना 5:3-4)**

जैसा कि यूहन्ना ने यहाँ सिखाया, सच्चा मसीही विश्वास विजय प्राप्त करता है - यह बना रहता है - परमेश्वर के प्रति समर्पण में, और परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता की अपनी अभिव्यक्ति दोनों में।

वास्तव में, जब हम प्रतीक्षा करते हैं कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करे, तो विश्वास और आज्ञाकारिता में बढ़ते रहना एक संघर्ष है। परंतु प्रत्येक युग के परमेश्वर के लोगों ने इस चुनौती का सामना किया है। यह बात पुराने नियम, नए नियम ,और पूरे कलीसियाई इतिहास में सच थी। परंतु हम जानते हैं कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ सत्य हैं, और कि मसीह अंततः उस सारे कार्य को पूरा करने के लिए वापस आएगा जो उसने आरंभ किया है।

> प्रेरित पौलुस मसीह में हमारी विश्वासयोग्यता को प्रेरित करने के बारे में अपनी पत्रियों में पूरी स्पष्ट रीति से लिखता है। यह उस बात को स्मरण रखना है जो

> मसीह ने हमारे लिए किया है, हमारे उद्धार को याद करें। यही सबसे मूलभूत प्रेरणा है। परंतु क्या आप जानते हैं कि पवित्रशास्त्र भी हमें अन्य प्रेरणाओं के बारे में बताने के लिए बहुत उत्सुक है। सबसे पहले, यह बात बिलकुल सत्य है कि न्याय का दिन शीघ्र आ रहा है। हम प्रत्येक व्यर्थ बात और प्रत्येक व्यर्थ कार्य का उत्तर देंगे। यह विश्वासयोग्यता के लिए प्रेरणादायक होना चाहिए। हमारे पास विशाल चित्र भी है, वह यह है कि हम अपनी गहरी आज्ञाकारिता में ही गहरे आनंद को प्राप्त करेंगे। कौन आनंद को नहीं चाहता? हम क्यों अपने आपको उस आनंद से वंचित रखें जब हम यह जानते हैं कि हमारी प्रेरणा केवल परमेश्वर के दंड और न्याय से बचना ही नहीं है, बल्कि उन आशीषों को प्राप्त करना है जो परमेश्वर हमें आज्ञाकारिता के द्वारा देता है? पवित्रशास्त्र एक और बात के बारे में भी स्पष्ट है। हम एक ऐसे संसार के सामने रहते हैं जो हमें देखता रहता है, और मसीही साक्षी की हमारी विश्वसनीयता का बहुत बड़ा महत्व है कि क्या यह संसार हमें मसीह में विश्वासयोग्यता के साथ रहते हुए देख सकता है या नहीं। यह वास्तव में इसके महत्व को बढ़ा देता है और हमे याद दिलाता है कि मसीह में विश्वासयोग्यता के लिए हमारे पास अनेक प्रेरणाएँ हैं।
>
> — डॉ. आर. एल्बर्ट मोहलर, जूनियर

एक दिन, जब यीशु वापस आएगा और हम उन सारी आशीषों को प्राप्त करेंगे जिसकी उसने भविष्यद्वाणी की है, तो हमारा विश्वास पूरी तरह से प्रमाणित हो जाएगा। पश्चाताप अतीत की बात हो जाएगी, और हमें अपने विश्वास का पुरस्कार दिया जाएगा। उस समय हम पृथ्वी पर परमेश्वर के परिपूर्ण और सिद्ध राज्य में रहेंगे और उसकी वाचा की सारी आशीषों का आनंद लेंगे। परंतु तब तक, परमेश्वर के साथ बंधी वाचा में हमारे जीवन पाप से पश्चाताप और विश्वास में बढ़ते रहने के द्वारा चलाए जाने चाहिए। और जब हम अपने प्रभु के प्रति विश्वासयोग्यता के साथ जीवन जीते हैं, तो हमारा वर्तमान का अनुशासन हल्का होगा, और हमारी भविष्य की आशीषों में बढ़ोतरी होगी।

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने यह देखा है कि नासरत का यीशु भविष्यद्वक्ता के कार्यभार को कैसे पूरा और संचालित करता है। हमने भविष्यद्वक्ता के कार्यभार की पुराने नियम की पृष्टभूमि पर ध्यान दिया है। हमने यीशु में इस कार्यभार की पूर्णता को देखा है, जिसमें हमने यह ध्यान दिया कि वह इस कार्यभार की योग्यताओं को पूरा करता है, इस कार्यभार की कार्यप्रणाली को पूरा करता है, और वह इस कार्यभार के लिए पुराने नियम की सारी अपेक्षाओं को पूरा कर रहा है। और हमने पवित्रशास्त्र में मसीह के भविष्यद्वाणीय प्रकाशन की सीमा और विषय-वस्तु पर ध्यान देने के द्वारा इन विचारों के आधुनिक उपयोग की खोज की है।

मसीह के भविष्यद्वक्ता के कार्यभार को समझना प्रत्येक विश्वासी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह हमें स्वयं को परमेश्वर के राज्य और उसके उद्देश्यों की ओर उन्मुख होने में सहायता करता है। यह हमें पूरी बाइबल में यीशु की शिक्षाओं को सुनने और उनके प्रति समर्पित होने की शिक्षा देता है। यह हमें अपने लिए उसके प्रकाशन को समझने की रूपरेखा प्रदान करता है। और यह हमें आश्वस्त करता है कि परमेश्वर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

निश्चित रूप से यीशु की उन सारी भविष्यद्वाणियों को पूरा करेगा जो उसने अपने पुनरागमन और हमारे अनंत उद्धार के विषय में की थीं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।